 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

फाल्गुन-चेत, संवत् नानकशाही ५४३-४४
वर्ष ५ अंक ७ मार्च 2012

संपादक : सिमरजीत सिंह *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंह *एम. एम. सी.*

चंदा

वार्षिक (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
वार्षिक (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु ॥
परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥१॥
भोलिआ हउमै सुरति विसारि ॥
हउमै मारि बीचारि मन गुण विचि गुणु लै सारि ॥१॥रहाउ॥
करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥
पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥२॥
अखी कुदरति कंनी बाणी मुखि आखणु सचु नामु ॥
पति का धनु पूरा होआ लागा सहजि धिआनु ॥३॥
माहा रुती आवणा वेखहु करम कमाइ ॥
नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ ॥४॥

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ११६८ से आरंभ होते राग **'बसंत'** की बाणी के प्रारंभ में श्री गुरु नानक देव जी उपरोक्त शबद द्वारा मनुष्य को अपने मन से अहंकार भुलाकर बसंत ऋतु की भांति सदा खिले रहने तथा प्रफुल्लित होकर प्रभु-गुणों को हृदय में बसाने की सीख दे रहे हैं। गुरु जी का फरमान है कि हे मन! यदि तू अहंकार वाली वृत्ति को बिसार दे तो तुझे बहुत-बहुत बधाई। अहंकार को मिटाने से तेरे अंदर सदा चढ़दी कला बनी रहेगी तथा तुझ में प्रफुल्लता आ जाएगी। गुरु जी का आगे कहना है कि हे मेरे मन! सृष्टि की संभाल करने वाले प्रभु को सदा अपने अंदर बसाकर रख तथा उसके गुणों की बदौलत सदा खिला रह। हे मन! यदि तू अहंकार को मिटाने वाले काम रोज़ाना करने लग जाए तो तेरे अंदर हरि रूपी वृक्ष के नाम-सिमरन की शाखाएं फूटने लगेंगी और उन पर आध्यात्मिक जीवन वाला सुंदर फल लग जाएगा। प्रभु रूपी वृक्ष से पत्ते रूपी ऐसी कृपा मिलेगी कि तुझे नम्रता रूपी घनी छाया प्राप्त हो जाएगी अर्थात् मन में प्रभु के निवास का एहसास प्रकट हो सुखद वातावरण मिल जाएगा। जो मनुष्य अहंकार को मिटाने हेतु प्रयत्न करेगा उसे प्रकृति में बसता प्रभु (मन रूपी) आंखों द्वारा दिखाई देने लगेगा, उसके कानों में प्रभु-स्तुति की आवाज़ गूंजने लगेगी और उसके मुख से सदा प्रभु के सच्चे नाम-सिमरन की ध्वनि सुनाई देने लगेगी। उस मनुष्य को लोक-परलोक की इज्ज़त का सम्पूर्ण ज्ञान मिल जाएगा तथा उसका मन स्थिरता में सदा टिका रहेगा।

गुरु जी अंतिम पंक्तियों में बता रहे हैं कि ये ऋतुओं वाले महीने तो आने-जाने वाले हैं, मगर अहंकार को मिटाने वाले काम करके देख लो, आध्यात्मिक जीवन की सदा आनंद में रहने वाली अवस्था कभी नहीं बदलेगी, सदा स्थिर रहेगी। जो मनुष्य सदा गुरमुखों वाली अवस्था में रहते हैं, प्रभु-याद में समय बिताते हैं, वे सदा हरे-भरे रहते हैं, उनके मन सदा खिले रहते हैं तथा उनकी आनंद-अवस्था में कभी सूखा नहीं आता।





आओ! होला महल्ला मनायें

सिक्खों को बुराइयों से जूझने की जन्म-घुट्टी तो सिक्ख धर्म के जन्म से ही श्री गुरु नानक देव जी ने दे दी थी। परिणामत: मज़हब, रंग-नसल, जात-पात, छूआ-छूत जैसी कई अहम बुराइयों की जड़ उख़ड़ गई। गुरू जी द्वारा बख्शिश किए गए मुख्य सिद्धांत-- 'नाम जपो, किरत करो, वंड-छको' ने एक नई जागृति पैदा की। समय के अनुसार जड़ पकड़ रही बुराइयों के खिलाफ सिक्ख गुरु साहिबान तथा उनके सिक्खों ने बड़ी हिम्मत एवं हौसले से लड़ाई लड़ते हुए, बेमिसाल शहीदियां प्राप्त करते हुए समाज को नई दिशाएं दी। बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए पूर्वगामी नीतियों का निर्माण किया जाता। दसम पातशाह साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय समाज की हालत बड़ी तरसयोग्य हो गई थी। राजनैतिक शक्तियों की आड़ में साधारण व्यक्ति पर कहर ढाया जा रहा था। स्त्रियों की दशा और भी तरसयोग्य थी। नव-विवाहितों को डोलियों में से ही उठा लिया जाता था। कोई भी जालिम हाकिमों के कुकर्मों को रोकने की हिम्मत न करता। गुरू जी ने उस समय की चुनौतियों पर दृष्टि डालते हुए महसूस कर लिया था कि संघर्ष के लिए नये पैंतरे धारण करने पड़ेंगे, आम जनता को निडरता का एहसास करवाना पड़ेगा। होली का त्यौहार जो झूठ पर सत्य की विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता था, मात्र दिखावा ही नहीं बल्कि कई तरह की बुराइयों को जन्म देने लग गया था। लोग एक-दूसरे पर गंद-मंद फेंकते, बुरा-भला बोलते, शराब पीते, जूआ खेलते हुए इस त्यौहार की मौलिकता से दूर जा रहे थे। गुरु साहिब ने १७५७ बिक्रमी की होली वाले दिन इकट्ठी हुई संगत को नये सिद्धांत से होला महल्ला मनाने का आदेश दिया। गुरू जी ने सिंघों के दो दल तैयार किये। दोनों दलों के योद्धाओं की पहचान के लिए उनको अलग-अलग रंग की पोशाकें पहनाईं। एक दल को किला होलगढ़ के रक्षक के रूप में तैनात कर दिया तथा दूसरे को किले पर हल्ला बोलने का हुक्म हुआ। जहां जीत प्राप्त करने वाले दल को गुरू जी द्वारा विशेष रूप से सम्मानित किया गया वहीं दोनों दलों को भरपूर कड़ाह प्रसाद भी छकाया गया। सिक्खों ने गुरू जी द्वारा बख़्शी इस परंपरा को श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर अमूल्य खजाने के रूप में आज भी संभाला हुआ है। यह गुरू जी की सिंघों को वो देन थी जिसकी बदौलत वे सवा-सवा लाख वैरियों के विरुद्ध डट गए। इसी बख्शिश ने सिक्खों को जुल्म के विरुद्ध डटना सिखाया, राजनैतिक पदों तक पहुंचाया, सच की खातिर मरना सिखाया।

आज जब हम २१वीं सदी में विचर रहे हैं तो हमारे सामने कई नई चुनौतियां खड़ी हैं। इन चुनौतियों की चिंता हर कोई कर रहा है। हमें चिता से चिंतन की ओर बढ़ना पड़ेगा। इन चुनौतियों का चिंतन करना ही आज हमारा प्रमुख कर्तव्य है, ताकि हम आने वाली पीढ़ियों को अपनी गौरवमयी विरासत से वाकिफ़ करवाकर जुल्म का मुकाबला करने के योग्य बना सकें।

आज हमें योजना बनाने की जरूरत है मादा-भ्रूण हत्या के विरुद्ध जंग लड़ने की। हिंदोस्तानी

समाज में मादा-भ्रूण हत्या जैसी अभद्र प्रवृत्ति अति प्राचीन है। यह बुराई इस हद तक पहुंच गई है कि अब जन्म लेने से पहले ही बच्ची का कत्ल कर दिया जाता है। इस अभद्र प्रवृत्ति को रोकने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब से भी आदेश जारी हो चुका है। इस बुराई के विरुद्ध लड़ने के लिए हमें अपने गांवों, महल्लों में लोगों को जागृत करना पड़ेगा। आओ! मादा-भ्रूण हत्या के विरुद्ध संघर्ष हेतु जागृत होने के लिए योजना बनायें तथा होला महल्ला मनायें।

नशे आज हमारी नौजवान पीढ़ी के लिए जी का जंजाल बन गये हैं। नशों में ग्रस्त जवानी ने किसी का तो क्या संवारना होता है, बल्कि अपने आप को संभालने में भी असमर्थ हो जाती है। आधुनिक परिवारों में जहां पहले ही एक-दो बच्चे हैं और यदि वे भी नशों के राह पर चल पड़ें तो उनके माता-पिता को जीते-जी लाशों के रूप में जीवन गुजारते हुए देखा जा सकता है। किसी साजिश अधीन देश की नौजवानी का इस मार्ग पर चल पड़ना आज एक बहुत बड़ी समस्या है। इस समस्या के हल के लिए हमें अपनी नौजवान पीढ़ी को जागृत करना पड़ेगा, उनको खेलों के प्रति जागरूक करके जीवन की अमूल्यता का ज्ञान करवाना पड़ेगा, सेहतमंद समाज के विकास के निर्माण में उनकी योग्य हिस्सेदारी का एहसास करवाना पड़ेगा। आओ! नशों को दूर भगायें तथा होला महल्ला मनायें।

संगीत की मनुष्य के जीवन में बड़ी अहम महत्ता मानी जाती है। श्री गुरु नानक देव जी गुरमति संगीत से दुनिया में एक नई क्रांति लेकर आए। हमारा गुरमति संगीत हमें वारों द्वारा विरासत से जोड़कर हमेशा ही गौरवमयी घटनायों से अवगत करवाता आया है, परंतु आज का संगीत पश्चिमी प्रभाव तले एक शोर ही बनकर रह गया है, जिस पर अश्लीलता की परत चढ़ाकर नौजवान पीढ़ी को भ्रमित करने की कोशिश की जा रही है। अब कुछ जागरूक सूझवान एवं महिलाओं द्वारा ऐसे ऐसे गायकों के विरोध में खड़े होना एक बढ़िया एवं सार्थक कदम है। आओ! हम भी इस समस्या के विरोध में योजनायें तैयार करें। गांवों में गुरबाणी कीर्तन, ढाढी वारों, कवीशरी वारों से नौजवानों को उनकी गौरवमयी विरासत से अवगत करवाने के लिए गुरमति समागम करवायें तथा होला महल्ला मनायें।

प्रदूषण की समस्या से आज सारा विश्व लड़ रहा है। हमारे वातावरण में इतना जहर हर रोज घुल रहा है कि मनुष्य का जीना ही मुश्किल होता जा रहा है। इस जहर को सोख लेने के लिए हमें प्रकृति द्वारा मिले अमूल्य साधन वृक्षों का हम कत्लेआम किए जा रहे हैं। हमें अपने भविष्य के बारे में सोचना पड़ेगा कि हमारी आने वाली पीढ़ी तंदरुस्त हो या बीमार? आओ! प्रदूषण को हटायें, वातावरण बचायें तथा होला महल्ला मनायें।

हमें अपने राजनैतिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक हालात पर भी दृष्टि डालनी पड़ेगी तथा भविष्य के लिए योजनायें तैयार करनी पड़ेंगी। हमारे गुरु साहिबान ने इसके प्रति हमें मीरी-पीरी का बहुत बड़ा सिद्धांत बख्शिश किया है। अगर हमारे पास अच्छी राजनैतिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक शक्ति होगी तो ही हम विकास की ओर जा सकेंगे। हमें संसार की दूसरी शक्तियों के मुकाबले में खड़े होने के लिए अच्छी योजनायें तैयार करके उनका प्रचार करना पड़ेगा। आओ! गुरबाणी से दिशा लेकर सकारात्मक योजनायें बनायें तथा होला महल्ला मनायें।

आज हमारे में किंतु-परंतु करने की प्रवृत्ति इतनी बढ़ गई है कि हम अपने गुरु साहिबान के मान-सम्मान को भी आंखों से ओझल करते जा रहे हैं। हम अपने थोड़े-से फायदे के लिए अपने इतिहास को बिगाड़कर पेश करने में कोई झिझक महसूस नहीं कर रहे, जबकि किसी भी घटना या वृत्तांत को समझने के लिए समय, भाषा, स्थान तथा परिस्थितयों का ज्ञान होना अति आवश्यक होता है। आज लेखक तथा विद्वान भाइयों के सामने यह बहुत बड़ी चुनौती है कि रातो-रात बने तथाकथित विद्वान जो हमारे इतिहास को बिगाड़कर पेश कर रहे हैं, उनके साथ कैसे निपटा जाये। आओ! लोगों को सही ज्ञान करवायें तथा होला महल्ला मनायें।

आज फैशन के दौर में फ़िल्मों आदि के प्रभाव अधीन हमारे बच्चे पतितता की मार तले आ रहे हैं। कई घरों में (सिक्ख) महिलाओं को बच्चों के केशों की संभाल के प्रति यह भी कहते हुए सुना जा सकता है कि "हमसे नहीं इनके केशों की संभाल होती, जब बड़े होंगे खुद ही रख लेंगे।" हमारी इन माताओं को उन महान माताओं को नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने हमारे अस्तित्व एवं पहचान को बरकरार रखने के लिए अपने दूध-पीते बच्चे नेजों पर टंगवा लिए। आज यदि हमारे बच्चे पतितता की ओर बढ़ रहे हैं तो इसका एक कारण हमारे द्वारा उनको सही अगुआई न देना भी है। वे अपनी जानने की शक्ति की भूख को फिल्मों, इंटरनेट, टी. वी. द्वारा ही पूरा कर रहे हैं। वहां उनको जो कुछ दिखाया जा रहा है वे उसको ही अपने जीवन में अपना रहे हैं। हमें चाहिए कि हम बच्चों के लिए खुद कुछ समय निकालें और उनको अपनी अमीर विरासत की जानकारी दें, जिससे उनके उज्जवल भविष्य को अंधेरों से बचाकर सीधे रास्ते पर डाला जा सके। आओ! बच्चों को विरासत से अवगत करवायें तथा होला महल्ला मनायें।

हमारे सामने उपरोक्त विकराल समस्याएं मुंह फैलाए खड़ी हैं। आओ, इनके मुकाबले के लिए योजनायें तैयार करें, अपनी प्राचीन परंपराओं से प्रेरणा लें तथा इन समस्याओं की जड़ उखाड़कर होला महल्ला मनायें। इन कार्यों के लिए हमें अपने नजदीक वाले गुरुद्वारा साहिब में खालसाई रूप-रंग-ढंग वाले संगती दीवान आयोजित करने पड़ेंगे। कई गांवों वाले मिलकर भी ऐसा उद्यम कर सकते हैं। होले महल्ले के स्थानीय संगती दीवान में सिक्ख नौजवानों की भरपूर शमूलियत बनाकर उनको बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की प्रेरणा दी जा सकती है। छोटे बच्चों को गुरुद्वारों के संगती समागमों में जाने की प्रेरणा दें। गांवों, महल्लों में खेल मेलों, गतका अखाड़ों, साहित्यक सभाओं, गुरमति समागमों आदि में बच्चों को जाने की प्रेरणा दें! होले महल्ले वाले दिन नौजवानों को खूनदान, आंखें दान करने आदि के कैंप लगाकर समाज के प्रति शुभ कार्म करने के लिए प्रेरणा दें! बच्चों को रंगों में प्रयोग किए जा रहे रासायनिक पदार्थों, उनके प्रदूषण तथा नुकसान से अवगत करवायें! इस दिन बच्चों, नौजवानों में वृक्ष लगाने तथा उनको पालने की प्रेरणा देकर, गुरमति विचारधारा की दिशा पर चलते हुए, पंथक आन-शान तथा हर्षोल्लास से होला महल्ला मनाते हुए मानवता की सेवा में अपना हिस्सा डालें! आओ! होला महल्ला मनायें।



भारतीय जनसाधारण के नायक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. सुधा जितेंद्र**

भारतीय जनसाधारण की रक्षा हेतु, उसके उत्थान एवं पहचान हेतु सर्वस्व न्यौछावर करने वाले महापुरुषों में दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी शीर्ष स्थान पर अवस्थित हैं। जब्रो-जुल्म जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी आप जी ने धैर्य, साहस एवं वीरता का दामन नहीं छोड़ा और आतताइयों का दमन करके ही दम लिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का विराट व्यक्तित्व उस आलौकिक प्रतिभा से संयुक्त है जिसने अपने पितामह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से 'मीरी-पीरी' की शिक्षा तथा पिता श्री गुरु तेग बहादर जी से 'बलिदान' का पाठ जीवन-घुट्टी के रूप में ग्रहण किया। उनका जीवन भक्ति, शक्ति और बलिदान की त्रिवेणी से आप्लावित रहा। हिंदी साहित्य के ऐतिहासिक काल-विभाजन की दृष्टि से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी रीतिकाल के अन्तर्गत आते हैं जो औरंगजेब का काल था। आश्चर्य है कि दशम गुरु जी की बाणी को छोड़ कर तत्कालीन अन्य किसी कवि के काव्य में औरंगजेब की कठोर, अत्याचारी नीतियों के विरुद्ध विरोध का स्वर बुलंद नहीं है। रीतिकाल का कवि धर्माश्रय छोड़ कर राज्याश्रयों में पहुंच चुका था। इन राज्याश्रयों में विलासता इतनी बढ़ गई थी कि मठ-मंदिर भी इससे अछूते नहीं थे। सांस्कृतिक चेतना, धर्म-भावना तथा मानव-मूल्य छिन्न-भिन्न हो गए थे। मठ और मंदिर देव-दासियों एवं मुरलियों के चरणों की छन-छन से गूंजते रहते थे।[१] काव्य का परिशीलन और सृजन इस युग के कवियों का शुगल नहीं था। स्वार्थी कर्तव्य-कर्म था।[२] इस कर्म के लिए इस युग के अधिकांश कवि इधर-उधर आश्रयदाता की तलाश में घूमते थे और योग्य आश्रयदाता पाकर उनकी इच्छा से उनकी प्रशस्तिपूर्ण उक्तियां लिखते थे। इन कवियों से ऊंचे सांस्कृतिक तत्वों और जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति की आशा करना बेकार था। यह ज्ञात हो कि जब औरंगजेब धार्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से मानवता का मान-मर्दन कर रहा था उस समय ये दरबारी कवि भूषण लाल सेनापति को छोड़ कर सुंदरियों के नख-शिख वर्णन में, नायिका के सूक्ष्म भेद करने में तल्लीन थे। घोर शृंगारिकता, कामोत्तेजक भाव-भंगिमाओं के वर्णन तथा अलंकरण के बोझ से मुक्त होने के लिए भारतीय संस्कृति चीख रही थी। इसकी पुनर्स्थाप्ति करने के लिए धर्मगुरु, मानवता के रक्षक, सच्चे संत-सिपाही, विद्वान, महान कवि, इतिहास सृजक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बीड़ा उठाया। यह युग न केवल धर्म के ह्रास का युग था बल्कि चतुर्दिक मानवता के ह्रास, आर्तनाद और हाहाकार का युग था जिसकी स्थिति को गुरु जी ने अपनी चिंतनधारा, जीवन-दृष्टि और काव्य-शिल्प से बुलंद किया। संसार में अपने आगमन के इसी कारण को स्पष्ट करते हुए दशम गुरु जी कहते हैं :

इह कारनि प्रभ मोहि पठायो ॥
तब मै जगत जनम धरि आयो ॥३१॥

(बचित्र नाटक)

मृतप्राय: भारतीय जीवन में दशम पिता ने भक्ति, विवेक और कर्म की संजीवनी से नए

*अध्यक्षा, हिंदी विभाग, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर-१४३००१, मो. ९८१४८-५१०१०

प्राणों का संचार किया तथा कंचन और कामिनी की उपासना वाले युग में अर्थ एवं काम की निरंकुशता के स्थान पर धर्म और आत्मिक कल्याण की प्रतिष्ठापना की।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन जिस सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित था, उस पर विस्तृत बात करने से पहले संस्कृति एवं भारतीय संस्कृति की मूलभूत मान्यताओं से अवगत होना आवश्यक है। 'दि इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडिया' में संस्कृति की परिभाषा देते हुए लिखा गया है, "संस्कृति का अर्थ चिंतन तथा कलात्मक सृजन की वे क्रियाएं समझनी चाहिए, जो मानव-व्यक्तित्व और जीवन के लिए साक्षात उपयोगी न बनते हुए भी उसे समृद्ध बनाने वाली हैं।"[३] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएं ही संस्कृति हैं।"[४] इसको स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं, "नाना प्रकार की धार्मिक साधनाओं, कलात्मक प्रयत्नों और सेवा, भक्ति तथा योगमूलक अनुभूतियों के भीतर से मनुष्य उस महान सत्य के व्यापक और परिपूर्ण रूप को क्रमश: प्राप्त करता रहा है, जिसे हम 'संस्कृति' शब्द द्वारा व्यक्त करते हैं।"[५]

कर्मेन्द्रियों, ज्ञानेंद्रियों, मन, बुद्धि और आत्मतत्व के महत्व को पहचान कर सर्वोच्च धरातल पर पहुंचने की प्रक्रिया को ही सांस्कृतिक चेतना कहा जा सकता है। इस सांस्कृतिक चेतना का विकास एवं विस्तार मानव के आध्यात्मिक जीवन के सभी प्रकारों--- बौद्धिक, धार्मिक और नैतिक की अभिव्यक्ति में निहित है। संस्कृति के परिक्षेत्र में व्यष्टि चेतना के साथ समष्टि चेतना भी समाहित है।

महान क्रांतिकारी, आदर्श मानव श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भारतीय संस्कृति के इन्हीं सुप्त मूल्यों को प्रज्वलित करने के लिए, पददलित हो रही मानवता में गौरव जगाने के लिए कुछ प्रतिज्ञाएं कीं :

धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥४३॥

(बचित्र नाटक)

तथा :

चिड़ीओं से मैं बाज तुड़ाऊं।
सवा लाख से एक लड़ाऊं।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।

जब-जब भी धर्म का ह्रास हुआ है तब-तब उसके अभ्युत्थान के लिए किसी महापुरुष ने जन्म लिया है :

जब जब होत अरिसट अपारा ॥
तब तब देह धरत अवतारा ॥

(दशम ग्रंथ)

और धर्म की रक्षा के लिए मात्र नौ वर्ष की आयु में अपने पिता को शीश देने के लिए कहने वाले और कोई नहीं अपितु अपूर्व साहसी, स्वाभिमानी और निर्भीक (बालक) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ही थे। आप जी ने अत्याचारों से विचलित धर्म को पिता जी के बलिदान द्वारा ही पुन: अविचल एवं स्थिर बनाया। धर्म की रक्षार्थ आप जी ने संपूर्ण वंश को न्यौछावर कर दिया, क्योंकि आप जी का दृष्टिकोण संकीर्णता से कोसों दूर था। आप जी के लिए तो समस्त 'खालसा' ही आप जी के पुत्र थे, तभी तो आप जी ने फरमाया :

इन पुत्रन के सीस पर वार दिए सुत चार।
चार मुए तो क्या भया जीवत कई हजार।

इससे सिद्ध होता है कि धर्म रूपी भवन को स्थायी आधार देने के लिए आप जी की प्रेरणा से आप जी के पूरे वंश ने ही नींव की ईंट का कार्य किया और धर्म-रक्षार्थ इस महान यज्ञ में गुरु जी ने अपने प्राणों से पूर्णाहुति दी। ऐसा दृढ़ निश्चयी, अडिग, सिंघ-हृदय और शूरवीर पुरुष भारत तो क्या विश्व के इतिहास में भी मिलना दुर्लभ है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी और

जीवन समन्वय की भावना के विलक्षण गुणों से भरा पड़ा है। शैवों, शाक्तों और वैष्णवों द्वारा समादृत साहित्य का श्रद्धापूर्वक भाषानुवाद करना तथा करवाना सबसे बड़ा प्रयास-प्रमाण है। धर्म के क्षेत्र में यह दृष्टि उन्होंने गुरु परंपरा से ही ग्रहण की, जाति-समन्वय के क्षेत्र में गुरु जी ने मौलिक प्रयास किए। गुरु जी ने नवचेतना की ऐसी लहर शुरू की जिसने समाज का कायाकल्प कर दिया। आप जी ने प्रताड़ित एवं जर्जरित हिंदोस्तानी जनता को भीतर से जोड़ने का पुण्य कार्य आरंभ किया। खालसा पंथ की स्थापना समन्वय की विराट चेष्टा का सर्वाधिक सशक्त पहलू है जिसमें उन्होंने भिन्न-भिन्न जातियों, धर्मों के हीन समझे जाने वाले लोगों में से 'पंज प्यारे' बनाकर 'सिंघ' सजाया। यह समन्वय की संभवत: अब तक की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है, जिसमें ऊंच- नीच का समन्वय, गुरु-शिष्य का समन्वय, अमीर-गरीब का समन्वय तथा स्वामी-सेवक का समन्वय, भक्ति-शक्ति का समन्वय, शस्त्र-शास्त्र का समन्वय, कथनी-करनी का ऐसा समन्वय प्रस्तुत किया गया जो विरला एवं निराला है। आप जी के इस महान कर्म से समाज में व्याप्त वर्ण-व्यवस्था नष्ट करने का मार्ग समाज में प्रशस्त हुआ।

गुरु साहिब ने भेदभाव को मिटाने के लिए सबको सर उठाकर जीने का समान अवसर देने को अमली जामा पहनाया। वास्तव में नैतिक मान्यताओं की दृष्टि से जर्जर उस काल की यह मांग थी कि कलम के साथ तेग भी उठे और गुरु जी ने किसी अवतार का इंतजार कर रहे लोगों को अपना अवतार स्वयं बनने की प्रेरणा दी। केवल प्रेरणा ही नहीं अपितु आहत, पीड़ित और दुखी लोगों में जोश, बल एवं हिम्मत का संचार किया, उन्हें सिंघ बनाया, ताकि वे अपनी रक्षा स्वयं कर सकें। स्वाभिमान की रक्षा तो एक ओर रही, दूसरे के स्वाभिमान की रक्षा करते हुए उसे गर्व से जीना सिखाने की भावना, जो दशम गुरु जी में थी, वह अपूर्व थी, अप्रतिम थी। आप जी की यह भावना सिद्ध करती है कि आप जी को विश्व के एक-एक व्यक्ति के स्वाभिमान की चिंता थी। सही अर्थों में जातिगत और धर्मगत भेदभाव को दूर करने हेतु आप जी के द्वारा संगठित 'खालसा पंथ' निश्चित रूप से आप जी के मानवतावादी विचारों का आईना है। दशम गुरु जी द्वारा किया विरोध किसी व्यक्ति विशेष अथवा मत विशेष का विरोध नहीं था अपितु अत्याचार के विरुद्ध था। 'बचित्र नाटक' में अपना उद्देश्य स्पष्ट करते हुए आप जी फरमाते हैं:

जिम तिन कही तिनै तिम कहिहों ॥
अउर किसू ते बैर न गहिहों ॥३१॥

गुरु जी द्वारा अभावग्रस्त, निम्न एवं निर्बलों के आत्म-सम्मान को जागृत करने के लिए जिस 'खालसा पंथ' की स्थापना की गई, उसी को सर्वस्व मानते हुए फरमाया :

खालसा मेरो रूप है खास ॥ खालसे महि हउ करउ निवास ॥
खालसा मेरो पिंड प्राण ॥ खालसा मेरी जान की जान ॥

आप जी ने अकाल पुरख का भरोसा लेकर सिक्खों में साहस एवं त्याग की ऐसी लौ जगाई कि प्रत्येक सिंघ धर्म-रक्षा के लिए तैयार हो उठा। इतिहासकार डॉ नारंग का मत है, "वे मनुष्य, जिन्होंने कृपाण को छुआ तक नहीं था और न ही बंदूक को अपने कंधे पर रखा था, सशक्त वीर बन गये। आप जी ने (तथाकथित) धोबियों, चमारों और झीवरों को भी ऐसा सेनापति बना दिया जिनके खौफ से बड़े-बड़े राजा भयभीत होने लगे।"[६]

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को आत्मा की

अमरता पर अटूट विश्वास था, इसलिए उन्होंने मनुष्य को कामनाओं का त्याग करने का उपदेश दिया:

कामना अधीन सदा दामना प्रबीन
एक भावना बिहीन कैसे पावै जगदीस को ॥९॥
(अकाल उसतत)

आप जी ने मनुष्य को काम, क्रोध, अहंकार, मोह, लोभ, हठ इत्यादि शत्रुओं से सावधान रहने की चेतावनी दी, क्योंकि इन विषयों में फंसकर आत्मतत्व के दर्शन नहीं हो सकते :

काम क्रोध हंकार लोभ हठ, मोह न मन सिउ ल्यावै ॥
तब ही आतम तत को दरसे परम पुरख कह पावै ॥
(रामकली, पा: १०)

वस्तुत: दशम गुरु जी इन विकारों के परित्याग के माध्यम से मनुष्य को हउमै छोड़ने की ओर संकेत करते हैं, क्योंकि अहं के त्याग के बिना ज्ञानार्जन का पथ आलोकित नहीं हो सकता। आप जी ने मनुष्य को वाह्याचारों का त्याग कर सादा, सच्चे और निश्छल जीवन पर बल दिया, जैसे कि :

सभ करम फोकट जान ॥
सभ धरम निहफल मान ॥
बिन एक नाम अधार ॥
सभ करम भरम बिचार ॥२०॥५०॥(अकाल उसतत)

आप जी की यही भावना आप जी को मानव मात्र में विश्वास की ओर प्रेरित करती है इसलिए सभी धर्मों, जातियों से ऊपर उठकर आप जी घोषणा करते हैं:

. . . मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥
(बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व एक कर्मठ योद्धा का रहा है। आप जी ने मनुष्य को ऐसा सन्यास ग्रहण करने की प्रेरणा दी है जिससे घर ही 'वन' बन जाए, व्यक्ति मन से 'उदासी' हो जाए, गुरु द्वारा 'आत्मा' का उपदेश हो और विभूति 'नाम' की ली जाए। इससे घट के भीतर ही प्रभु की पहचान का समर्थन है:

रे मन ऐसो करि सनिआसा ॥
बन से सदन सबै करि समझहु मन ही माहि उदासा ॥
जत की जटा जोग को मज्जनु नेम के नखन बढ़ाओ ॥
गिआन गुरू आतम उपदेसहु नाम बिभूत लगाओ ॥
(रामकली, पा: १०)

एक ओर अपने पिता का बलिदान तथा दूसरी ओर शेष समस्त परिवार का। ऐसे बलिदान आत्म-शक्ति द्वारा ही संभव हैं और संभवत: आत्म-शक्ति ही दशम गुरु जी की प्रेरणादायिनी थी। आप जी को इष्ट की कृपा-दृष्टि चाहिए, भरोसा आप जी को अपने बाजुओं पर है :

या कल मै सभ काल क्रिपान के
भारी भुजान को भारी भरोसो ॥९२॥
(अकाल उसतत)

यह आत्म-शक्ति की स्थिति, निर्भीकता की स्थिति ही आप जी के जीवन की संचित निधि है। आत्म-शक्ति से प्रेरित गुरु जी का उद्देश्य तो देखिए :

जब आव की अउध निदान बनै
अत ही रन मैं तब जूझ मरों ॥ (दशम ग्रंथ)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसे कर्मठ योद्धा, लोकनायक, कवि हृदय, आत्म-शक्ति से परिपूर्ण, निडर के भीतर इष्ट के प्रति भावना कितनी प्रखर एवं हृदय को द्रवित करने वाली है, वह आप जी के इस प्रसिद्ध पद से द्रष्टव्य है:

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा।
(असफोटक कबित्त, खयाल पा : १०)

भारतीय संस्कृति के मूल आदर्शों को दशम

गुरु जी ने नवीन आयाम भी प्रदान किए। आप जी क्षमा रूपी आभूषण को भी धारण किए हुए हैं जिनके उदाहरण आप जी के जीवन में भरे पड़े हैं। इसका सर्वाधिक सशक्त उदाहरण गुरु जी द्वारा उन चालीस सिक्खों को क्षमादान देना है जो पहले युद्ध में आप जी का साथ छोड़ गए थे। ऐसा कर्म कोई विशाल हृदय ही कर सकता है और गुरु जी ऐसे ही विशाल हृदय वाले महापुरुष थे।

निस्संदेह दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तप-त्याग, सेवा-साधना, साहस-निर्भीकता, भक्ति-शक्ति, मीरी-पीरी, कथनी-करनी, शास्त्र-शस्त्र की संगम स्थली हैं। आप जी ने न केवल धर्म और संस्कृति के लिए प्राणोत्सर्ग किए बल्कि तथाकथित दलित, हीन एवं हारी हुई जातियों में नए प्राणों का संचार करके उनमें स्वाभिमान की ऐसी भावना कूट-कूट कर भरी कि विपत्तियां उन्हें हतोत्साहित न कर सकीं और विपत्तियां रूपी आग से जूझकर वे कुंदन बन गए। आप जी ने त्रस्त मानवता की रक्षा के लिए सहिष्णुता, स्वातंत्र्य चेतना और आध्यात्मिकता की ऐसी त्रिवेणी प्रवाहित की जिसमें अत्याचार, अनाचार और उत्पीड़न छिन्न-भिन्न होकर बह गए। आप जी ने विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं छोड़ा। आप जी ने सर्व-सांझीवालता की अवधारणा को सच्चे अर्थों में मन, प्राण और बाणी में धारण किया। आज जबकि चहुं ओर धर्म, जाति, भाषा और सांप्रदायिकता की जंग छिड़ी हुई है, क्षुद्र लिप्साओं की पूर्ति के लिए मानव, मानव का शत्रु बना हुआ है, अपने-पराए के अंतर की खाई बढ़ती जा रही है तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, ऐसे में मानवता की खंडित जर्जर आत्मा को दशम पिता जी की बाणी, उनके कर्म और उनका समस्त जीवन-दर्शन ही सच्चे अर्थों में अवलंब दे सकता है।

प्रसंग :

१. नगेंद्र, रीतिकाव्य की भूमिका, पृष्ठ २१

२. वही, पृष्ठ १४६

३. दि इनसाइक्लोपीडिया, भाग २३, पृष्ठ ४४० (अनु.) नगेंद्रनाथ वसु।

४. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अशोक के फूल।

५. वही।

६. डॉ गोकुल चंद नारंग, ट्रांसफार्मेशन आफ सिखइज़म, पृष्ठ १३८



कविता

जिंदगी कुछ यूं गुज़ारें!

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

बैर को मन से निकालें !
ग़ैर को अपना बना लें !
जिंदगी कुछ यूं गुज़ारें! जिंदगी कुछ यूं गुज़ारें !!
दूसरों के काम आएँ !
गिर रहे को थाम पाएँ !
जिंदगी कुछ यूं गुज़ारे, जिंदगी कुछ यूं गुज़ारें !
गमज़दों का ग़म मिटाएं !
भूलते का भ्रम हटाएं !
जिंदगी कुछ यूं गुज़ारे! जिंदगी कुछ यूं गुज़ारें !!
सो रहे को हम जगाएं !
रो रहे को हम हंसाएं !
जिंदगी कुछ यूं गुज़ारे! जिंदगी कुछ यूं गुज़ारें !!
आखिरी जब वक्त आये,
तो साथ में नेकी ही जाये ।
जिंदगी कुछ यूं गुज़ारे! जिंदगी कुछ यूं गुज़ारें !!



**४०, बजरिया, मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उत्तर प्रदेश)-- मो ९४११६-०७६७२*

खालसे का होला महल्ला

-ज्ञानी भगत सिंघ

भारत एक ऐसा देश है जहां प्रभु-भक्ति के साथ-साथ वहम-भ्रम, पाखंड तथा बहुदेव-पूजा प्रधान रही है। होली का त्योहार भी एक प्राचीन गाथा से जुड़ा हुआ है जिसमें कई तरह के वहम-भ्रम घर कर गए। होली के त्योहार के साथ भक्त प्रहलाद के पिता हरणाखश (हिरण्यकशिपु) तथा बुआ होलिका की साखी जोड़ी जाती है! होलिका तथा हरणाखश मिथिहास में बदी के चिन्ह हैं तथा भक्त प्रहलाद नेकी का चिन्ह है। होली का त्योहार मनाने के ऐसे ढंग प्रचलित हो गए कि लोग बदी का अपमान करने की जगह खुद ही बदी का रूप बनने लगे। होली मनाने के गलत ढंग, वहम-भ्रम तथा पाखंड आदि भक्त प्रहलाद की नेकी को भुलाकर अन्य दंगे-फसाद वाली कहानी बनाने लगे।

लोगों ने परस्पर एक-दूसरे के सिरों पर राख, गंदगी डालकर तथा असभ्य हरकतों द्वारा जीवन को भ्रष्ट करना ही होली के त्योहार को मनाना मान लिया। आज भी बुराई को नफ़रत करने की जगह त्योहार मनाते समय लोग खुद बुराई का रूप बन जाते हैं तथा नीच हरकतें करके बदी का प्रचार करने लगते हैं।

हिंदोस्तान गुलामी के कारण अपना विरसा भूल चुका था। गुलाम कौमों के रीति-रिवाज़ गुलामों वाले बन जाते हैं। सिक्ख गुरु साहिबान जहां धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जागृति लाए वहीं उन्होंने समाज के बहुत समय से पलीत चले आ रहे रस्मो-रिवाज़ को भी नया रूप दिया। गुरु साहिबान ने फिजूल रस्मों की कांट-छांट करके उनको सार्थक रूप दिया। 'वैसाखी' तथा 'दीवाली' का स्वरूप श्री गुरु अमरदास जी एवं श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय बदला गया और 'होली' त्योहार को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'होला' के रूप में प्रकट किया। समय की जरूरत के अनुसार फिजूल रस्मों-रिवाजों तथा त्योहार की गलत रिवायतों में समय नष्ट करने की जगह इसको सार्थक तथा ज़िंदगी में आनंद पैदा करने के लिए 'होला' के समय पुरातन वीर-रसी साहित्य तथा ज़िंदगी को सुंदर बनाने वाले सुनहरी नुक्ते लोगों के सामने प्रस्तुत किए जाते; मुगल राज्य की गुलामी का एहसास कराया जाता; दीवान सजते, कथा-वार्ता होती तथा ज्ञान-चर्चा के साथ शस्त्र-विद्या की सिखलाई दी जाती। किसी भी कौम को धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक आज़ादी हासिल करने के लिए मानसिक एवं शारीरिक बल बढ़ाने की जरूरत होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लोगों के अंदर जहां आत्मिक बल पैदा करने के लिए, नई रूह फूंकने के लिए आवश्यक पुरातन साहित्य का अनुवाद देशी भाषा में करवाया, वहीं शारीरिक बल पैदा करने के लिए शिकार खेलना, तैराकी, घुड़सवारी, कुश्ती, जिस्मानी वर्ज़िश के तौर-तरीके प्रयोग करने आरंभ कर दिए। उस समय के प्रचलित शस्त्रों तथा अस्त्रों की सिखलाई हर गुरसिक्ख के लिए जरूरी कर दी। होला महल्ला के समय पंद्रह दिन श्री अंनदपुर साहिब में वीर-रसी वारों तथा शस्त्र-विद्या के विशेष अभ्यास करवाये जाते। देश के हर कोने से संगत एकत्र होती; सिक्खों को दसतार सजाने अथवा यूनीफार्म की विशेष सिखलाई दी जाती, जो हर कौम के वीर-रसी कर्त्तव्य के

लिए जरूरी होती है। शस्त्रधारी सिक्खों के दो विरोधी ग्रुप बनाकर, उनकी बनावटी जंग करवाकर नीति में निपुण किया जाता। 'होले' के समय ये सारे कर्त्तव्य पूरे हो जाते तथा आखिरी दिन 'महल्ले' के लिए नियत किया जाता।

'होले महल्ले' का मतलब हल्ले से या धावा बोलकर होला समाप्त करना है। यह फौजों का मनोबल ऊंचा करने का तथा बढ़ाने का एक विचित्र एवं आलौकिक तरीका था; जिसका असर यह होता कि होले महल्ले में भाग लेने वाला प्रत्येक गुरसिक्ख फौजी ज़बत में परिपक्व होकर, सिक्ख-श्रद्धा एवं शूरवीरता वाले गुण ग्रहण कर, गीदड़ों से शेर बनकर, संसार में धर्म चलाने के लिए कुर्बानी जैसे महान गुणों का धारणी बनकर हर समय शहीदी के लिए तत्पर अर्थात् जुझारू होकर श्री अनंदपुर साहिब से अपने घर को लौटता। परिणामत: ऐसे गुरू के सिक्ख जहां विचरते, अपने जैसे अन्य अनेकों धर्मियों को धर्म की खातिर जूझने, शहीद होने के लिए तत्पर करते। इस तरह गुरु साहिब ने जुझारू लहर का आरंभ किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मुर्दों में जानें डालकर, चिड़ियों से बाज़ तुड़वाकर, बुज़दिल, कमजोर, कायर तथा आलसी लोगों में शूरवीरता भरकर, ठंडे खून को गरमाकर जुझारू लहर को जन्म दिया। कोई भी धर्म, फिलासफी तथा ठोस से ठोस विचार भी जुझारू वृत्ति के बिना बच नहीं सकते। जैसे खेतों के बाग आदि के इर्द-गिर्द बाड़ करने के बिना खेती को पशु उजाड़ देते हैं, इसी तरह पशु वृत्ति वाले मनुष्य धार्मिक विचारों को संसार में प्रचलित नहीं होने देते। गुरु महाराज के विचार के अनुसार जब मनुष्य के मौलिक अधिकारों को अथवा धर्म को बचाने के लिए सारे प्रयास निष्फल हो जायें, कोई दलील काम न करे, दुष्ट-दोखी अपनी जिद पर कायम रहें तो एक धार्मिक मनुष्य के लिए भी जुझारू वृत्ति धारण करनी आवश्यक होती है। गुरु महाराज का फ़रमान है:

जब आव की अउध निदान बनै,
अत ही रन मै तब जूझ मरों ॥

एक जगह और गुरु जी फरमान करते हैं:

चू कार अज़ हमह हीलते दर गुजशत ॥
हलालस्तु बुरदन ब शमशीर दसत ॥२२॥

(ज़फ़रनामा)

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपने सिक्खों को शस्त्रों से प्रेम करने की अमूल्य दात बख्शी तथा गुरु-दरबार में आने वाले सिक्ख को शस्त्र एवं घोड़ा लेकर आने की आज्ञा की। इस परंपरा को श्री गुरु हरिराय साहिब, श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कायम रखा। जब भी गुरु साहिब प्रचार-यात्राओं पर लोगों को सही रास्ते डालने के लिए जाते तो सैकड़ों शूरवीर शस्त्रधारी घुड़सवार योद्धा सिक्ख गुरु महाराज की हजूरी में होते। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस जुझारू वृत्ति को प्रचंड ही नहीं किया बल्कि संसार के महान जरनैलों, नीतिवानों, रूहानी अगुओं, योद्धाओं, शूरवीर बहादुरों को अपने जंगी कारनामों के चमत्कार दिखाकर चकित भी कर दिया। संसार के समस्त शूरवीर योद्धा शस्त्रों को स्वीकार करते हुए, इनको अकाल पुरख की परम-शक्ति का चमत्कार मानते हुए दुष्टों, दोखियों तथा मूर्खों के संहार का साधन मानते हैं। संसार में नेक तथा श्रेष्ठ मनुष्यों की विचारधारा की रक्षा के लिए जुझारू वृत्ति अति जरूरी है। शस्त्र इसका अभिन्न अंग हैं। कलगीधर पिता का फरमान है :

असि क्रिपान खंडो खड़ग,
तुपक तबर अरु तीर ॥
सैफ सरोही सैहथी,

इहै हमारै पीर ॥३॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सब वस्तुओं से ज्यादा अस्त्रों-शस्त्रों को प्यार किया तथा हर सिंघ के लिए शस्त्रधारी होना जरूरी करार दिया। शस्त्रों के बिना मनुष्य भेड़ के समान है, जो मर्जी उसको हांककर आगे लगा ले। स्वाभिमान, आत्म-रक्षा तथा चढ़दी कला की निशानी मात्र कृपाण ही है जो समूह शस्त्रों का चिन्ह है। समूह शस्त्रों को खड़गधारी पिता प्रणाम करते हैं:

जिते ससत्र नामं ॥ नमसकार तामं ॥ . . ९१॥

यहां तक कि गुरु महाराज ने अकाल पुरख को भी खड़गधारी सम्बोधित किया है। मृत्यु से निडर होना तथा शस्त्रधारी होना वास्तव में मनुष्य की मानवता का चिन्ह है। गुरु जी ने फरमान किया है :

धंनि जीओ तिह को जग मै,
मुख ते हरि चित्त मै जुद्धु बिचारै ॥
देह अनित्त न नित्त रहै,
जसु नाव चढ़ै भव सागर तारै ॥
धीरज धाम बनाइ इहै तन,
बुद्धि सु दीपक जिउं उजीआरै ॥
गिआनहि की बढनी मनहू हाथ लै,
कातरता कुतवार बुहारै ॥२४९२॥

इस सवैये में गुरु महाराज ने जीवन-तत्व बयान किया है, जो जुझारू वृत्ति का प्रतीक है। जो मनुष्य देह को अनित्त समझता है, वही मौत के भय से रहित हो सकता है, वही हर समय जीवन-संघर्ष को समझ कर हर समय युद्ध के लिए तत्पर रहता है। इस मूल तत्व की अज्ञानता के कारण मनुष्य कायर, बुज़दिल, बेगैरत तथा गुलामी वाला जीवन व्यतीत करता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने उद्देश्य की आजमाइश के लिए सबसे पहले पाउंटा साहिब के समीप भंगाणी का युद्ध करके विचित्र लीला रची, जिसमें शहीद होने वाले सिक्खों को गुरु जी ने जुझारू का परम पद बख्शा। किसी भी धर्म-युद्ध में जूझने वाले सिक्ख को 'जुझारू' कहा जाता है, बशर्ते कि उसमें सच्चाई, नम्रता, दया, धैर्य तथा क्षमा के महान गुण मौजूद हों। जो इनके बिना मुल्कगीरी के लिए, किसी को गुलाम बनाने के लिए, निजी उद्देश्य के लिए, किसी सरकार से तनख्वाह लेकर उसकी धक्केखोर नीति को कायम रखने के लिए मैदाने-जंग में मर जाता है; किसी औरत, बूढ़े तथा बच्चे पर हमला करता है, वह जुझारू नहीं कहला सकता और जो मर्जी कहलाये। जुझारू वृत्ति वाले सिक्ख में निजी स्वार्थ तथा अहंकार नहीं हो सकता। अहंकारी सदैव दुखी रहता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय से लेकर आज तक सिक्ख हर वर्ष 'होले' के कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। आखिरी दिन श्री अनंदपुर साहिब तथा अन्य कई जगह पर होला महल्ला जुलूस की शक्ल में निकाला जाता है, जिसकी परंपरा निहंग सिंघों ने अपनाई हुई है। इस तरह सिंघों में जुझारू वृत्ति परिपक्व होती जाती है। समय के साथ कई बार सिंघों के उत्साह में उतार-चढ़ाव आते रहे। सिक्खों पर जितने ज्यादा जुल्म हुए, उतने ज्यादा जुझारू पैदा हुए। हकूमतें न्याय की ओर चलीं तो जुझारू कम प्रकट होने शुरू हो गए। यह जुझारू लहर जो ख़ालसा पंथ के हकों की रक्षा के लिए गुरु साहिबान के समय से चली आ रही है, न कभी खत्म हुई है और न ही कभी खत्म होगी। जुल्म करने वाले हाकिम खत्म तथा बर्बाद होते रहेंगे, किंतु जुझारू सिंघ खत्म नहीं होंगे। "*मंनूं साडी दातरी असीं मनूं दे सोए, जिउं जिउं मनूं वड्ढदा, असीं दूण सवाए होए।*" हर वर्ष 'होला महल्ला' सिक्खों को यह याद करवाता रहेगा।



होला महल्ला का संदेश

-स. चमकौर सिंघ*

होला महल्ला खालसे का एक विशेष दिवस है जो कि होली के बाद अगले दिन मनाया जाता है। खालसा होली के परंपरागत रूप को स्वीकार नहीं करता, क्योंकि लोगों ने एक दूसरे के ऊपर गंदगी फेंकने, उत्पात मचाने, शराब पीने, अभद्र भाषा का प्रयोग करने जैसी घटिया हरकतों को होली मनाने का ढंग समझ लिया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस त्यौहार को नये ढंग से मनाना आरंभ किया। आप जी ने भारतीय लोगों की सोई हुई आवेशपूर्ण भावना को जगाकर उनके मन में चढ़दी कला का एहसास पैदा करने के लिए होली को 'होला महल्ला' के रूप में मनाने की रीति चलाई। चेत वदी एकम, सं. १७५७ को दशम पातशाह ने अनंदपुर साहिब में 'होलगढ़' के स्थान पर पहली बार 'होला महल्ला' मनाया।

'होला' शब्द 'होली' का धड़ल्लेदार परिवर्तित रूप है जो साहसहीन हुए लोगों के हृदय में उत्साह एवं उल्लास पैदा करता है। खालसे ने लोगों के मन में चढ़दी कला एवं शूरवीरता का जज्बा भरने के लिए अनेकों ऐसे 'बोले' (नारे) प्रचलित किए हैं जिनको 'खालसई बोले' कहा जाता है, जैसे 'एक' को 'सवा लाख' कहना, 'मौत' को 'चढ़ाई करना' कहना, 'तेग' (तलवार) को 'तेगा', 'देगचा' (बड़ा बर्तन) को 'देगा', 'दसतार' (पगड़ी) को 'दसतारा', 'मूंछों' को 'मुछहिरा', 'दाढ़ी' को 'दाढ़ा' कहना। इसी प्रकार 'होली' को 'होला' कहना खालसे की विलक्षणता एवं चढ़दी कला की भावना को प्रकट करता है। कवि निहाल सिंघ के शब्दों में :

बरछा ढाल कटारा तेगा कड़छा देगा गोला है।
छका प्रसाद सजा दसतारा अरु करदौना टोला है।
सुभट सुचाला अरु लख बाहां कलगा सिंघ सुचोला है।
अपर मुछहिरा दाढ़ा जैसे, तैसे बोला होला है।

(महान कोश (पंजाबी), देखो 'होला')

'पंजाबी लोकधारा विश्व कोश' के अनुसार महल्ला अरबी के शब्द 'महल्लहे' का तद्भव है, जिसका भाव उस स्थान से है, जहां 'फतह' करने के पश्चात ठिकाना या ठहराव किया जाए। 'होले महल्ले' वाले दिन खालसे को दो दलों में बांट कर दशम पातशाह गुरिल्ला (बनावटी) युद्ध करवाया करते थे। एक दल होलगढ़ पर काबिज हो जाता, दूसरा उस पर आक्रमण करके किले हथियाने का यत्न करता। इस प्रकार नकली युद्ध के द्वारा युद्ध-युक्ति एवं पैंतरेबाजी का अभ्यास होता। युद्ध के नगारे (डंके) बजते, हथियारों का टकराव होता, जैकारे गूंजते और अंत में फतह की खुशियां मनाई जातीं; फिर वहीं पर दरबार सजता तथा शस्त्रधारी सिंघ अपने कौशल दिखाते। पहले 'महल्ला' शब्द इसी भाव में प्रयोग किया जाता रहा परंतु धीरे-धीरे यह शब्द उस जलूस (प्रदर्शन) के लिए प्रचलित हो गया जो फतह के उपरांत सज-संवर कर नगारों की चोट पर

(शेष पृष्ठ 36 पर)

*HIG-725, Phase-I, Urban Estate, Patiala-147001, Mo. 84273-00575

शहीद भाई सुबेग सिंघ--भाई शाहबाज सिंघ

*-सिमरजीत सिंघ**

भाई सुबेग सिंघ का जन्म पश्चिमी पंजाब के लाहौर जिले की चूहणीआं तहसील के जंबर गांव के निवासी राय भागा (संधू) के घर हुआ। आजकल जंबर गांव पाकिस्तान के पंजाब राज्य के जिला कसूर का गांव है, जो लाहौर-मुलतान सड़क पर फेरू से आगे छांगा मोड़ पर आबाद है। इस गांव को पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के पावन चरणों का स्पर्श प्राप्त है। इस गांव में गुरु साहिब बहिड़वाल से चलकर पहुंचे थे। यहां गुरु साहिब ने भाई किदारा, भाई समद्धू, भाई मखंडा, भाई तुलसा, भाई लालू आदि सिक्खों को चरण-पाहुल देकर गुरसिक्खी बख़्शी थी। इस गांव में गुरु जी की आमद की याद में गुरुद्वारा थंम साहिब सुशोभित है। भाई सुबेग सिंघ का घराना सरकारी ठेकेदारी का काम करता था। ये अरबी-फारसी भाषा के उच्च विद्वानों में गिने जाते थे। सरकार में इनका अच्छा मान-सम्मान था। भाई सुबेग सिंघ को उनके पिता जी ने अच्छी तामील हासिल करवाई। उन्होंने भी अपने पूर्वज़ों की तरह सरकार से ठेके लेकर अपना काम बड़ी ही मेहनत तथा ईमानदारी से करना शुरू किया। भाई सुबेग सिंघ भजन-बंदगी करने वाले तथा अच्छे आचरण वाले व्यक्ति थे। इनका सिक्खों के मन में बहुत सत्कार था। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में ज़िक्र है :

तुरक उसे खालसो वल तोरैं,
खालसा भी तिस को भल लोरैं।
कोई तुरकन परै ज़रूरी काम,
तौ उस भेजैं कर कर सलाम।

भाई सुबेग सिंघ के घर भाई शाहबाज़ सिंघ ने जन्म लिया। जब भाई शाहबाज़ सिंघ की आयु पढ़ने योग्य हो गई तो उन्हें पढ़ने के लिए लाहौर की एक मसजिद में भेजा गया। भाई शाहबाज़ सिंघ बहुत ही सूझवान थे। उन्होंने सिक्ख धर्म एवं सिक्ख इतिहास के बारे में जानकारी अपने माता-पिता से प्राप्त की हुई थी।

बाबा बंदा सिंघ बहादर की शहीदी के बाद सिक्ख बहुत कठिनाइयों में समय काट रहे थे। सिक्खों पर हकूमत का कहर टूट पड़ा था। हज़ारों ही निर्दोष सिक्खों को असहनीय यातनायें देकर शहीद किया जा रहा था। सिक्खों के सिरों के दाम लगाकर उनका नामो-निशान मिटाने के लिए ढिंढोरा पीटा जा रहा था। जब सिक्खों पर यह भयानक समय चल रहा था तो उस समय कुछ इसलामिक वर्ग भी राजनीतिक नीतियों से तंग-परेशान थे। फलस्वरूप कई रियासतों के सैयदों ने बगावत कर दी। बादशाह फरुख्सियर इस बगावत को दबाने में व्यस्त हो गया। यह सिक्खों के लिए सुनहरी मौका था। वे जंगलों-पहाड़ों से निकलकर मैदान में आकर अपने गुरु-घरों की सेवा-संभाल करने लग गए। सिक्खों ने १७८१ बिक्रमी (१७२४ ई) की वैसाखी श्री अमृतसर में खुलकर मनाई, जिसमें भारी इकट्ठ हुआ। इस समय के दौरान सिंघों

** संपादक, गुरमति प्रकाश/गुरमति ज्ञान।*

की भाई तारा सिंघ वां की जत्थेदारी तले शाही फौज के साथ झड़प हुई, जिसमें भाई तारा सिंघ शहीदी प्राप्त कर गए। इसके बाद सिंघों ने शाही फौज़ पर यकायक हमले करने शुरू कर दिए। सिंघों के यकायक हमलों से तंग आकर १७३३ ई. में जकरीया ख़ान ने सिक्खों के प्रति सख़्ती करने के बारे में तथा अपनी मुश्किलों सम्बंधी लाहौर से दिल्ली के बादशाह को लिख भेजा। उसने भाई सुबेग सिंघ की सलाह से सुझाव लिखा कि सिक्खों को जागीर दे दी जाये तथा उनके किसी आदमी को नवाब चुनकर साथ मिला लिया जाये। बादशाह ने ज़करीया ख़ान की सलाह मान ली।

ज़करीया ख़ान ने सिक्खों के साथ संधि करने के लिए एक लाख रुपए की जागीर, नवाबी का खिताब, ख़िलअत, नज़राने आदि देने का फैसला किया। इस काम के लिए भाई सुबेग सिंघ को अपना अधिवक्ता बनाकर श्री अमृतसर खालसे की कचहरी में भेजा। श्री अकाल तख़्त साहिब के संरक्षण में इकट्ठे हुए खालसा पंथ ने पहले तो यह सब कुछ स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, जैसे कि 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में जिक्र है :

हम को सतिगुर बचन पातिशाही,
हम को जापत ढिग सोऊ आही ॥३६॥
हम राखत पातिशाही दावा,
जां इतको जां अगलो पावा।
जो सतिगुर सिक्खन कही बात,
होगु साई नहिं खाली जात ॥३७॥

किंतु भाई सुबेग सिंघ के बार-बार कहने तथा समझाने पर सिक्खों ने नवाबी लेनी कबूल कर ली। अधिकांश सिक्ख अपने नाम पर नवाबी लेने के लिए तैयार नहीं थे। अंत में सब सिक्खों ने प्रस्ताव पारित करके स. कपूर सिंघ फैजलपुरिये को नवाब की पदवी लेने के लिए कहा। स. कपूर सिंघ ने खालसे की आज्ञा से पांच सिंघों के चरणों को नवाबी की ख़िलअत स्पर्श कराकर नवाबी कबूल कर ली। इसके साथ ही खालसे को दीपालपुर, कंगणवाल, झबाल परगनों की जागीर दी गई। इसकी एक लाख रुपये वार्षिक आमदन थी। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' के अनुसार :

सिंघ कपूर झलै पक्खो थोई।
क्रिपा नज़र पंथ उस वल होई। . . .
पंच भुजंगीअन चरनी छुहाइ।
धरो सीस मोहि पवित्र कराइ ॥४७॥

भाई सुबेग सिंघ के यत्नों का सदका कुछ समय के लिए पंजाब के माहौल में शांति आ गई। भाई सुबेग सिंघ को सूबेदार जकरीया ख़ान ने लाहौर के कोतवाल के पद पर नियुक्त कर दिया। भाई सुबेग सिंघ ने कोतवाल बनने पर लोगों को यातनाएं देकर मृत्यु के घाट उतारने की सज़ा बंद कर दी। मौत की सज़ा खास हालातों में केवल फांसी, कत्ल या तोप के आगे बांधकर उड़ा देने की ही जारी रखी। शहीद सिंघों के सिर, जो किले की दीवारों पर मीनारों की तरह चिने हुए थे या कुएं में फेंके हुए थे, सबको निकलवाकर उनका अंतिम संसकार करवा दिया। शहर में सरेआम गाय काटने पर पाबंदी लगा दी तथा अन्य बहुत-सी बुरी रीतियां बंद करवा दीं। उन्होंने वर्ष भर अपना काम बहुत मेहनत, ईमानदारी तथा न्यायपूर्ण ढंग से किया। इनके काम करने के ढंग से लाहौर के निवासी बहुत खुश थे। जब लाहौर में सिक्खों को कत्ल कर दिया जाता था तो इनका मन बहुत दुखी होता था। ये लोग सिक्खों की मृतक देहों को इकट्ठा करके उनका अंतिम संसकार कर देते थे तथा उनकी यादगारों की निशानदेही कर देते

थे। भाई सुबेग सिंघ ने लाहौर में ऐसी निशानदेहियों पर सिक्खों की कई यादगारें भी तामीर करवाईं।

१७४५ ई में ज़करीया ख़ान की मृत्यु के बाद लाहौर का सूबेदार यहीआ ख़ान को नियुक्त किया गया। यहीआ ख़ान ने भी सिक्खों पर अत्याचार करने शुरू कर दिए। वो शुरू से ही भाई सुबेग सिंघ के साथ नफ़रत करता था। उसने भाई सुबेग सिंघ के विरुद्ध शिकायतें सुननी शुरू कर दीं।

जिस मसजिद में भाई शाहबाज़ सिंघ विद्या हासिल करने के लिए जाते थे वहां एक दिन बहस के दौरान आप ने सिक्ख धर्म के बारे में अपने विचार पेश करके सभी को अपनी योग्यता का लोहा मानने के लिए मज़बूर कर दिया। इस ज्ञान-चर्चा में बहुत सारे विद्वानों को मुंह की खानी पड़ी। इसकी ख़बर मौलवी तक भी पहुंची। मौलवी ने उन पर मुसलमान बनने के लिए ज़ोर डाला। कई तरह के लालच दिए गए, परंतु वे टस से मस न हुए। स. रतन सिंघ (भंगू) 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में लिखते हैं:

जैसे तुमै दीन है पयारा।
तैसे ही है धरम हमारा।

मौलवी ने सूबेदार यहीआ ख़ान के आगे शिकायत कर दी। यहीआ ख़ान ने तफ्तीश करने के लिए भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ को कचहरी में पेश होने का हुक्म दिया। सूबेदार ने भी उनको इसलाम धर्म धारण करने के लिए मनाने के बहुत-से प्रयत्न किए, किंतु भाई शाहबाज़ सिंघ न माने। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' के अनुसार :

सुबेग सिंघ फड़ जंबरों मंगाया।
तिसका बेटा साथ फड़ाया।

सिक्खों की मदद करने के दोष में भाई सुबेग सिंघ को भी कैद कर लिया गया तथा इसलाम धर्म धारण करने के लिए ज़ोर डाला गया। 'पंथ प्रकाश' के अनुसार :

कहयो न्वाब तुम आवो दीन,
लेवो दाम औ काम औ ज़मीन ॥७॥
नहीं तो मरनों कर मनजूर,
चढ़ो चरख गिर होवो चूर।

अंत में इन दोनों पिता-पुत्र को पकड़कर जेल में बंद कर दिया गया। इनको इसलाम धर्म कबूल करवाने के लिए हर कोशिश की गई, किंतु ये दोनों योद्धा अपने धर्म पर डटे रहे और हर तरह के कष्ट झेलने के लिए तैयार हो गए। भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ ने हाकिमों को कहा कि "जिस तरह तुम्हें अपना धर्म प्रिय है, उसी तरह हमें भी अपना धर्म प्यारा है। मृत्यु का हमें कोई डर नहीं, मृत्यु ने तो आना ही आना है। यदि धर्म परिवर्तन करने से भी मृत्यु टल नहीं जाती, तो फिर अपने ज़मीर को मारकर जीना किस काम का?" ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

तुरक भए जे मरैन कबही तौ हम तुरक बनैहैं।
मौत रहे जे तहि भी सिर पर तो कयों धरम तजैहैं।

'तवारीख गुरू खालसा' के कर्ता ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं कि भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ियों पर चढ़ाने से पहले घोर यातनायें दी गईं। उनको नंगा करके उल्टा लटकाया गया; कोड़े मारे गए तथा अन्य कई प्रकार के कष्ट दिये गये।

यहीआ ख़ान ने इनको चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद करने का फरमान काज़ी द्वारा जारी करवा दिया। पहले भाई सुबेग सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाया गया। भाई सुबेग सिंघ पर

कोई सख्ती चलती न देखकर उनको चरखड़ी से उतारकर उनके नौजवान सपुत्र भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाकर यातनाएं देने का हुक्म दिया। भाई रतन सिंघ (भंगू) के अनुसार:

तब नवाब ऐसे कहयो, या को लेहु उतार।
याके बेटे को टंगयो, याहू को जु दिखार ॥६॥

जल्लादों ने भाई सुबेग सिंघ की आंखों के सामने भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाकर घुमाया। इन दोनों गुरसिक्खों ने अकाल पुरख के हुक्म अंदर सिमरन करते हुए सारी यातनाएं झेलीं। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में जिक्र है :

उचे चाढ़ फिर बहुत घुमाया,
वाहिगुरू तिन नांहि भुलाया।
जयों जयों मुख ते गुरू उचारे,
अकाल अकाल कर ऊच पुकारे ॥४॥

चरखड़ी की दो बार की मार से उनका सारा शरीर जख्मी हो गया था। उनका मास ज़ंबूरों से तोड़ा गया। ऐसी दर्दनाक यातनायों को देखकर हर एक ने मुंह में उंगली डाली हुई थी। जल्लाद यातनाएं दे-देकर थक चुके थे। आखिर, उन्होंने भाई शाहबाज़ सिंघ को बंदीखाने में भेज दिया।

एक नई चाल द्वारा दोनों पिता-पुत्र को एक दूसरे से अलग करके यह अफवाह फैला दी कि दोनों ने इसलाम धर्म कबूल कर लिया है। भाई शाहबाज़ सिंघ को कहा गया कि "तू अभी बच्चा है। तेरी उम्र दुनिया देखने की है। तेरे पिता ने तो अपनी उम्र भोग ली है। तू समझदार और फारसी पढ़ा हुआ है, इसलिए तुझे जिद छोड़कर इसलाम धर्म कबूल कर लेना चाहिए। 'पंथ प्रकाश' में जिक्र किया गया है :

दीन मुहंमदी कर कबूल तू सरदारी बड पाहैं।
तूंतो पढयो फारसी अरबी बुद्धीवान दिसैहैं।
अभि नवेस कालेस एहु हठ छोड कयोन सुख लैहैं।
खाइ पैन लिय पिदर तुमारे बूढा मरनों चैहैं।
खांण पीण दी उमर तुमारी तूं कयों जिंदड़ी दैहैं।
मजब धरम पर मूरख मरहैं चत्रन मरते कोहैं।

भाई सुबेग सिंघ पर ज़ोर भी डाला गया कि वो इसलाम कबूल करके दुनिया में अपनी जड़ बनाए रखे। इकलौते पुत्र के शहीद हो जाने के बाद दुनिया में उनके बाद कोई उनका नाम लेने वाला भी नहीं बचेगा। भाई सुबेग सिंघ ने धर्म गंवाकर, मर-मर कर जिंदा रहने की बजाय गर्व से धर्म पर दृढ़ रहते हुए मरने को प्राथमिकता दी। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में बताया गया है :

सिक्खन काज सु गुरू हमारे,
सीस दीओ निज सन परवारै ॥२७॥
चारे पुतर जान कुहाए,
सो चंडी की भेंट कराए।
हम कारन गुर कुलहि गवाई,
हम कुल राखैं कौण बडाई ॥२८॥

अर्थात् गुरु साहिबान ने हमारे लिए चारों पुत्र कुर्बान कर दिए, सरवंश वार दिया। मैं अपनी कुल रखूं, यह कौन-सी कुल का यश है?

भाई सुबेग सिंघ का उत्तर सुनकर यातनाओं का दौर फिर शुरू हो गया। बुरी तरह से मार-पीट की गई। पिता-पुत्र दोनों को इकट्ठा बांधकर, चरखड़ी पर चढ़ाकर घुमाया गया। दोनों को आखिरी दम तक चरखड़ी पर घुमाते हुए इसलाम कबूल करने के लिए कहा जाता रहा, परंतु ये दोनों आखिरी दम तक यही बोलते रहे :

सुबेग सिंघ तब कुरनश करी,
धंन चरखड़ी धंन यह घरी ॥८॥

चाढ़ चरखड़ी हमैं गिरावो,
सो अब हम को ढील ना लावो।
हम तो गुर के सिक्ख सदावैं,
गुर के हेत प्राण भल जावैं ॥९॥
(श्री गुर पंथ प्रकाश)

यह घटना १७४५ ई की है जब पिता-पुत्र दोनों को लाहौर में चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद कर दिया गया। भाई शाहबाज़ सिंघ की आयु उस समय मात्र १८ वर्ष की थी। स: रतन सिंघ भंगू 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

सुबेग सिंघ जंबर सुत नाल ।
चढ़दै चरख जिन जपयो अकाल।
धन धन वै जिन सिदक न हारा।
दीआ सीस मुख गुरू उचारा।

स्रोत सूचना :
१) स: रतन सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ कोश
२) भाषा विभाग पंजाब, पंजाब कोश
३) ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा
४) प्रिं सतिबीर सिंघ, अठारहवीं सदी दी बीर परंपरा दा विकास
५) प्रिं तेजा सिंघ-- डॉ गंडा सिंघ, सिक्ख इतिहास
६) स. रतन सिंघ (भंगू), श्री गुर पंथ प्रकाश
७) ज्ञानी गिआन सिंघ, पंथ प्रकाश
८) भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश

FORM IV

१.	प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
२.	प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की पहली तारीख
३.	मुद्रक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
४.	प्रकाशक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
५.	संपादक का नाम	:	स. सिमरजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	संपादक, गुरमति ज्ञान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
६.	मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर

मैं सिमरजीत सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी अनुसार पूर्णत: सही है।

तारीख -०१/०३/१२

हस्ताक्षर/-
(सिमरजीत सिंघ)
संपादक, गुरमति ज्ञान।

सरदार बघेल सिंघ

-प्रो: सवरनजीत सिंघ*

सरदार बघेल सिंघ १८वीं शताब्दी के उन मुख्य सिक्ख सरदारों में से एक प्रसिद्ध सरदार थे जिन्होंने सिक्खी की शानो-शौकत को बढ़ाया। यह बघेल सिंघ ही थे जिन्होंने दिल्ली तक अपना दबदबा कायम किया। १७६१ ई को ये 'करोड़ा सिंघ मिसल' के जत्थेदार बने। जत्थेदार करोड़ा सिंघ संतापहीन होने के कारण, उसके परलोक-गमन के उपरांत इस मिसल की जत्थेदारी स. बघेल सिंघ को दी गई। श्री गोकुल चंद नारंग के विचार के अनुसार स. बघेल सिंघ जत्थेदार करोड़ा सिंघ के अनुयाइयों में सबसे अधिक साहसी थे। इनके नेतृत्व में मिसल ने भारी शक्ति प्राप्त की। इनकी सेना १२००० सिपाहियों तक पहुंच गई थी तथा इनके क्षेत्र का विस्तार सतलुज से जलंधर तक हो गया था। इनकी राजधानी करनाल के पास चंडाली थी। प्रिंसीपल सतिबीर सिंघ के विचार के अनुसार, "स. बघेल सिंघ ने तीस हज़ार सिंघों का एक दल बना लिया था। स. बघेल सिंघ अपने समय का एक प्रसिद्ध अगुआ एवं जरनैल था। गंग-जमन-दुआब का कोई भी ऐसा इलाका नहीं था जिसको इसने रौंदा न हो। जलंधर से लेकर पीलीभीत तक और अंबाला से लेकर अलीगढ़ तक इनका सिक्का चलता था। यह एक ऊंचे आचरण वाला दिलेर योद्धा था।"

'प्राचीन पंथ प्रकाश' के कर्ता भाई रतन सिंघ (भंगू) स. बघेल सिंघ की शख्सियत का निरूपण करते हुए लिखते हैं कि वे अति शूरवीर तथा नेक स्वभाव वाला थे :

बघेल सिंघ उस हस्स कर कह्यो।
मुलक लड़े बिन किन छड दयो।. . .
४८१(४८२)

हम लरनो मरनो किम संग।
यहि है हमरा नित्त खेल।६७ (५४४)
पंथ मद्ध है गुरू की शकति।
पंथ मद्ध जपि तपीए भगत।. . . ९९ (५४७)

सभी इतिहासकार इस बात को मानते हैं कि स. बघेल सिंघ ने करोड़ा सिंघ मिसल का भौगोलिक क्षेत्र बहुत बढ़ाया। यहां तक कि इन्होंने दिल्ली पर भी कब्जा करने का यत्न किया। इन्होंने अलीगढ़, खुर्जा तथा इटावा को घेरा डाला और वहां के नवाब ईसा खां को हराया एवं जलंधर-दुआब के हुक्मरान मुहम्मद खां को हराकर नूरमहिल तक खालसई सिक्का चलाया। स. बघेल सिंघ इतने शक्तिशाली हो गये थे कि कोई उनकी मर्जी के खिलाफ दिल्ली से पंजाब नहीं आ सकता था।

स. बघेल सिंघ एक महान नीतिज्ञ भी थे। इसकी कई उदाहरणें मिलती हैं। जिस प्रकार १७८० ई में जब दिल्ली के वज़ीर अबदुल्ला खां ने शहजादा फरजंद को पटियाला के हुक्मरान अमर सिंघ के विरुद्ध भेजा तो स. बघेल सिंघ ने उसको पहले अपने इलाके में से गुजरने दिया, परंतु जब उसकी फौज पटियाला पहुंची तो स. बघेल सिंघ उसको सोधने के लिए पटियाला पहुंच गये और शहज़ादा फरजंद से हार स्वीकार करवाई। इसी तरह जब मनाराओ मराठा (मरहट्टा) ने पंजाब की ओर रुख किया तो

उसको घेरा डाल कर मराठों के अगुओं से हार स्वीकार करवाई। दूरदृष्टि वाला होने के कारण स. बघेल सिंघ ने महसूस कर लिया था कि दिल्ली पर मुगलों की नाममात्र ही हकूमत है, इसलिए उन्होंने १७८७ ई में सभी मुखी सरदारों को चुनिंदा साहसी सिंघ भेजने के लिए लिखा ताकि दिल्ली पर कब्जा किया जा सके। इस तरह ४०,००० फौज के साथ वे १७८७ ई. के आरंभ में ही मजनू टीला जा पहुंचे। वहां से नीला तथा मुगल मुहल्ले पर ऐसा आक्रमण किया कि शहर के लोग भाग उठे। अब लाल किला सिक्खों के पैरों तले था। मुगल बादशाह आलम ने स. बघेल सिंघ के साथ टक्कर लेने की बजाय अपने वज़ीर आज़म गौहर को संधि करने के लिए भेजा। दोनों के मध्य जो संधि हुई उसकी मुख्य बातें ये थीं :

१) खालसे को तीन लाख रुपये हर्जाने के रूप में दिये जाएं।

२) शहर की कोतवाली को चुंगी वसूल करने का अधिकार दिया जाये।

३) जब तक गुरुद्वारों की सेवा पूर्ण न हो जाये वे अपने साथ ४००० सवार रखेंगे।

इन सारी शर्तों को मुगल बादशाह ने स्वीकार कर लिया। इससे स. बघेल सिंघ का दिल्ली पर दबदबा कायम हो गया।

सरदार बघेल सिंघ मात्र एक योद्धा, जरनैल तथा नीतिज्ञ ही नहीं बल्कि महान सिक्ख भी थे। उनके अंदर गुरु का प्यार एवं मज़लूमों की रक्षा के लिए उत्साह भरा हुआ था। इस सिक्खी-सिदक वाले जत्थेदार ने दिल्ली में रहकर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब, श्री गुरु तेग बहादर साहिब, माता सुंदरी जी तथा माता साहिब कौर जी से संबंधित स्थानों एवं गुरुद्वारों का निर्माण करवाया।

सबसे पहले स. बघेल सिंघ ने माता सुंदरी जी तथा माता साहिब कौर जी के निवास-स्थान पर गुरुद्वारा बनवाया। इसके उपरांत महल्ला जयपुर में 'बंगला साहिब' के नाम पर गुरुद्वारा बनवाया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की याद में 'गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब' तथा 'गुरुद्वारा सीसगंज साहिब' बनवाया।

सरदार बघेल सिंघ आचरण के पक्ष से बड़े महान थे। उनके मन में गैर-सिक्ख औरत की भी इज्जत बचाने का कितना ख्याल था, इसका पता इस घटना से चल जाता है कि जब उनको पता चला कि जलालाबाद के हाकिम मुहम्मद खां ने जबरदस्ती एक ब्राह्मण की लड़की को अपने घर रख लिया है तो तुरंत ही वो जलालाबाद पहुंचे और लड़की को वापिस लाकर इज्जत से उसके घर पहुंचाया।

दिल्ली के बादशाह शाह आलम ने उस समय स. बघेल सिंघ के साथ मुलाकात करने की इच्छा प्रकट की जब वे गुरुद्वारों की सेवा करवाने के उपरांत वापिस पंजाब लौटने लगा। बिना शीश झुकाये, शस्त्र समेत स. बघेल सिंघ हाथी पर सवार होकर खुद मुलाकात के लिए गये और पहुंचकर गर्जकर फतहि बुलाई। बादशाह ने जवाब में सबको उसी तरह फतहि बुलाने को कहा। बादशाह ने सरदार बघेल सिंघ के सम्मान में उन्हें एक हाथी, सोने की जंजीर, पांच घोड़े तथा अन्य बहुत-से तोहफे देकर विदा किया। बादशाह शाह आलम सरदार बघेल सिंघ के जीवन से बहुत प्रभावित हुआ। सरदार बघेल सिंघ १८०३ ई. में गुरु-चरणों में जा विराजे।



श्री रवींद्र नाथ टैगोर का पंजाब व पंजाबियत से प्रेम

*-प्रो हरमहेन्द्र सिंघ**

श्री रवींद्र नाथ टैगोर भारत के सुप्रसिद्ध कवि थे। उन्हें भारत के कण-कण से प्यार था। कशमीर से लेकर कन्याकुमारी तक के इतिहास और भूगोल को उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा का हिस्सा बनाया। राष्ट्रीय-गान की रचना करते हुए सबसे पहले उन्होंने पंजाब की वंदना की। महाकवि टैगोर पंजाबी संस्कृति से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने अनेक कविताओं में सिक्ख धर्म, सिक्ख संस्कृति एवं सिक्ख गुरुओं के योगदान को सराहा। श्री रवींद्र नाथ टैगोर की पंजाब के साथ सांझ उतनी ही पुरानी है, जितने बंगाल और पंजाब के रिश्ते। बंगाली लेखकों पर भी श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का अपनी तरह का गहरा प्रभाव है। महाकवि टैगोर ने १८८६ से १९१० तक २५ वर्षों में बार-बार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के व्यक्तित्व पर अपनी कलम चलाई। महाकवि टैगोर ने सबसे पहले 'बालक' नामक पत्रिका में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन के ऊपर एक आलेख लिखा, जिसमें उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की प्रतिभा, सृजन-शक्ति, वीरता और देश-भक्ति जैसे गुणों को उभारा। इसके बाद वे लगातार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर सिक्ख इतिहास की घटनाओं को अपनी कविता के केंद्र में लाते रहे। इन घटनाओं में बाबा बंदा सिंघ बहादर, महाराजा रणजीत सिंघ जैसे वीर योद्धाओं की गाथाएं शामिल हैं।

महाकवि टैगोर ने अपने जीवन-काल में पंजाब के दो बड़े नगरों की यात्रा की --लाहौर और श्री अमृतसर। वे दो बार लाहौर गए। १९३५ में वे दो सप्ताह लाहौर के जनजीवन को देखते रहे और फिर दोबारा १९३६ में चार दिन लाहौर के बाज़ारों में पंजाबियत की शानो-शौकत को निहारते रहे। श्री टैगोर शांति निकेतन में प्राय: अपने विद्यार्थियों को कहा करते थे कि गुरु की फतह जैसी ध्वनि विदेशी जयघोषों से कहीं बेहतर है। महाकवि टैगोर की ज़िंदगी में पंजाब का प्यार कैसे बसा हुआ था, इसकी सर्वोत्तम उदाहरण जलियां वाला बाग के घटनाक्रम से जुड़ी हुई है। जलियां वाला बाग आज भी स्वतंत्रता संघर्ष का सबसे बड़ा प्रमाण है। आज़ादी-प्राप्ति की लहर इस घटना के बाद पूरे देश में तेज़ी से आगे बढ़ने लगी। रोलट एक्ट के विरोध में १३ अप्रैल, १९१९ ई को जलियां वाला बाग में देश-प्रेमियों की सभा पर अंग्रेज हकूमत ने बिना सोचे-समझे गोलियों की बौछार कर दी। १६५० गोलियां १० मिनटों में निहत्थे भारतीयों पर दाग दी गईं। ३६०० लोग घायल हुए, २००० शहीद। यह वो समय था जब श्री रवींद्र नाथ टैगोर विश्व में लोकप्रियता की बुलंदियों को छू चुके थे। 'गीतांजलि' पर उन्हें नोबल पुरस्कार प्राप्त हो चुका था। जलियां वाला बाग की घटना ने महाकवि टैगोर के हृदय को असह दुख पहुंचाया। महाकवि टैगोर ने इस घटना का विरोध करते हुए अंग्रेज

१२५, कबीर पार्क, श्री अमृतसर- १४३००२, मो ९३५६१-३३६६५

सरकार को 'सर' का खिताब लौटाते हुए पंजाबियों के दुख-दर्द की इस प्रकार अभिव्यक्ति दी :

"पंजाब में मामूली घटनाओं को दबाने के लिए पंजाबियों पर हुए अत्याचार ने मुझे अंदर तक हिला दिया है। ऐसे जुल्म की उदाहरण कहीं नहीं मिलती। सांस्कृतिक सरकारों के इतिहास में ऐसा कुछ भी नहीं होता, ऐसा मैं दावे के साथ कह सकता हूं। पंजाब में मेरे भाइयों ने जो जुल्म झेला है, अपमान सहारा है, यह सब कुछ ज़बरदस्ती, शांत हुए भारतीय मनों में कटुता पैदा कर गया है। मुझे लगता है, सरकार की आंखों में प्रतिशोध का चश्मा चढ़ा हुआ है। अपने देशवासियों के लिए मैं कम से कम इतना तो कर ही सकता हूं कि विरोध प्रकट करने के लिए सारे मान-सम्मान-सूचक तगमे इस समय वापिस करूं और उसके नतीजे भुगतने के लिए खुद तैयार रहूं। मैं इस दुखद समय में सम्मान-सूचक पदवियों को छोड़ कर उन देशवासियों के साथ खड़ा होना चाहता हूं, जिन्होंने अपने फर्जों को पहचानते हुए उन अपमानों को झेला, जो अमानवीय थे।" अंत में महाकवि टैगोर ने लिखा : "मैं महामहिम को विनय करता हूं कि मुझे 'सर' की उपाधि से मुक्त किया जाए।"

यह है महाकवि टैगोर का पंजाब-प्रेम। पंजाबियों के साथ उनका पारिवारिक रिश्ता भी था। महाकवि टैगोर की बहन सुवरन कुमारी देवी की बेटी लाहौर के दत्त परिवार में विवाहित थी। रामभज दत्त लाहौर हाईकोर्ट के जाने-माने वकील थे। पंजाब के साहित्यकारों पर भी महाकवि टैगोर का गहरा प्रभाव था। प्रसिद्ध पंजाबी लेखक बलराज साहनी को पंजाबी में लिखने की प्रेरणा महाकवि टैगोर ने ही दी थी। वे गुरमति संगीत से भी बहुत प्रभावित थे। आज भी 'टैगोर संगीत' की छवियों में 'गुरमति संगीत' की गुणवत्ता के पहचाना जा सकता है। महाकवि टैगोर अपने पिता श्री देविंद्र नाथ ऋषि के साथ श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में बैठकर कीर्तन का आनंद उठाया करते थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा से वे हमेशा प्रभावित रहे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में संकलित भक्त कबीर जी की बाणी के अनेक पदों का उन्होंने अंग्रेजी में अनुवाद भी किया। डलहौजी की सुंदरता भी उन्हें आकर्षित करती थी। पंजाबी कवि श्री दविन्द्र सत्यार्थी पर महाकवि टैगोर के व्यक्तित्व का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वे पंजाब के दूसरे टैगोर बन गए। उनका रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा और पहरावा महाकवि टैगोर जैसा ही हो गया। दविन्द्र सत्यार्थी अपने जीवन में लंबे समय तक महाकवि टैगोर के साथ रहे। अमर भारती ने महाकवि टैगोर की अनेक रचनाओं का सीधे बंगाली से पंजाबी में अनुवाद किया। पंजाबी कथाकार मोहन भंडारी को बतौर कथाकार 'मां मैनूं टैगोर बना दे' कहानी से पहली पहचान मिली। प्रोफेसर पूरन सिंघ के कुछ-कुछ अनुभव महाकवि टैगोर जैसे हैं। महाकवि टैगोर के खुले विचारों को अपने ढंग से प्रो. पूरन सिंघ ने भी स्वीकार किया। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित 'आरती' "गगन मै थालु" का बंगाली में महाकवि टैगोर ने जो अनुवाद किया, उसके स्वर सुनें:

आरती करे चंदर तपन
देव मानव वंदे चरन
आसीन से विश्व सरन
तार जगत मंदिरे।

(शेष पृष्ठ 25 पर)

सरदार भगत सिंघ के जीवन का एक पक्ष
कालकोठरी बनाम अध्ययन कक्ष

*-डॉ. मधु बाला**

देश की आज़ादी के लिए अल्पायु में जीवन कुर्बान करने वाले सरदार भगत सिंघ के विषय में यह बात बहुत ही आश्चर्यपूर्ण है कि फांसी की सजा होने के बाद कालकोठरी में जीवन की अंतिम घड़ियां गिनते हुए जहां साधारण व्यक्ति के मन में डर और खौफ़ होता है वहीं स. भगत सिंघ ने वह समय राजनीति, अर्थशास्त्र, विश्व-क्रांति और समाजशास्त्र के विषय में लिखी गई विद्वान लेखकों की पुस्तकों का अध्ययन करते हुए व्यतीत किया। ज्ञान और विचार-शक्ति को उन्होंने इस कद्र मजबूत बना लिया कि मौत भी सामना करते हुए घबरा रही थी। स. भगत सिंघ के त्याग और बलिदान से मौत भी जैसे स्वयं पल-पल मर रही हो।

जेल विभाग के पत्रों, सुखदेव के भाई के मार-अ़फ्त भेजे पत्रों और गुप्त तौर से भेजे पत्रों द्वारा जानकारी मिलती है कि स. भगत सिंघ के पत्रों में पुस्तकों, उनके लेखकों, यहां तक कि लाइब्रेरी के रजिस्टर में दर्ज़ उस पुस्तक के नंबर का जिक्र होता था। चार्ल्स डिंक्ज़ उनका मनपसंद लेखक था। टैन डेज़ दैट शुक दी वर्ल्ड, प्रिंसीपल्ज़ ऑफ़ फ्रीडम आदि पुस्तकें उन्होंने जेल में रह कर ही पढ़ीं। रूसी क्रांति को समझने के लिए उन्होंने बड़ी लगन के साथ अध्ययन किया, उसके तरीके और परिणामों के बारे में जाना। गोरकी उमर-ख़्याम जार्ज बर्नार्श शॉ उनकी कालकोठरी के नितांत एकांत के साथी थे।

अध्ययन की गंभीरता और विशालता ने उनको लेखन हेतु प्रेरित किया। उन्होंने चार पुस्तकें लिखीं -- 'आत्म-कथा', 'द डोर टू डैथ', 'आइडियल ऑफ़ सोशलिज़्म', 'स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार।' 'आत्म-कथा' में जहां स. भगत सिंघ का जीवन वर्णित है वहीं भारत के क्रांतिकारी गर्म दल की सम्पूर्ण संघर्षमयी स्थिति का भी ज़िक्र है। इस पुस्तक का उद्देश्य था कि नौजवान पीढ़ी शारीरिक बल के साथ-साथ मानसिक तौर पर भी देश की आज़ादी में भाग लेने के लिए क्रांतिकारियों का जबरदस्त समर्थन करें। 'द डोर टू डैथ' पुस्तक में रूस, इटली, फ्रांस जैसे अनेक देशों के वीरों और शहीदों के बारे में वर्णन किया है, जिन्होंने अपने देश की गुलामी के विरुद्ध संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत किया। उस ज़िक्र का मन्तव्य यह था कि भारत के नौजवान भी उन देशों की राजनीति के बारे में जानें, बेखौफ़ और निडर जीवन जीने वाले नौजवानों के बारे में जानकारी प्राप्त करके क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हों और देश को आज़ाद करवाने के लिए इस महान कार्य में अपना बलिदान तक देने के लिए तैयार रहें।

'आइडियल ऑफ़ सोशलिज़्म' में साम्राज्यवाद का उद्देश्य और विधान वर्णित है। देश की आज़ादी के बाद पहला और मुख्य मुद्दा था--

**आई-१०९, गली नं. ५, मजीठिया इन्कलेव, पटियाला-१४७००५, मो. ९९१४१-९०७२४*

संविधान बनाना। भारत के भावी राजनीतिज्ञ कहीं स्वतन्त्र भारत के संविधान की रचना करते हुए अंधेरे में न रहें, इसलिए आज़ादी के नए सूरज के प्रकाश में सही मार्ग दर्शाने वाली इस पुस्तक की रचना की।

'स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार' नामक पुस्तक में पंजाब के पिछड़े क्रांतिकारी जीवन का वर्णन है। इसमें पहले राजनीतिक आंदोलन तथा भारत माता सोसाइटी के पूरे इतिहास का वर्णन किया है।

अध्ययन करना स. भगत सिंघ के लिए कोई समय बिताने का साधन नहीं था, अपितु उनका शौक था। नाजुक परिस्थिति में ज्ञानवान व्यक्ति ही जीवन की कठिनाइयों को झेल सकता है। सड़क पर चलते हुए भी वे पढ़ते रहते थे। कोई पल ऐसा नहीं होता था जब उनके लंबे कोट की जेब में पुस्तक न होती हो। दर्ज़ा चार के विद्यार्थी होते ही उन्होंने सरदार सिंघ, लाला हरदयाल, सूफी अंबा प्रसाद की रचनाएं पढ़ ली थीं। नेशनल कॉलेज में आकर यह शौक गहराई और सुचारू अध्ययन में परिवर्तित हो गया। उनका ज्ञान इस कद्र गहरा था कि कोई संत-महात्मा, पीर-पैगंबर ही इस दृष्टि से सोच सकता है कि "ब्रिटिश कानून की लचक का फायदा लेकर हमारी सजाओं में कमी करवाने की कोशिश न की जाए और न ही बचाव के लिए यह कहा जाए कि हम क्रांतिकारी हैं।"

स. भगत सिंघ को उत्साहित करने वाला विक्टर ह्यूगो का नावल 'लॉ मिज़रेबल' था, जिसमें फ्रांस के राजसी इंकलाब का जिक्र था। उनकी अध्ययन-रुचि, ज्ञान और लगन का अंदाजा इस वृत्तांत से लगाया जा सकता है कि जब जेल अधिकारी ने उनसे पूछा, "आप इतनी किताबें मांगते हैं कि हम सैंसर करते-करते थक जाते हैं। आप उन्हें पढ़ते भी हो या देखकर ही वापिस कर देते हो?" तब इसके उत्तर में स. भगत सिंघ ने कहा था, "मेरी मंगवाई हुई किताबों में से किसी एक का भी कोई चैप्टर खोल लो, मैं बता दूंगा कि उसमें क्या लिखा है" यह सुनकर जेल अधिकारियों को बड़ी हैरानी हुई थी।

स. भगत सिंघ बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इंकलाबी का गुण उन्हें बचपन से ही मिला था। शिक्षा, जोश और नयी सोच ने उनको उच्च दर्जे का पाठक, लेखक, नेता और मानवता के लिए कुर्बानी देने वाला देशसेवक एवं देशभक्त बना दिया। देश का यह महान शहीद पुस्तकों एवं पत्रों में दर्ज़ सैद्धांतिक विचारों के कारण आज भी हमारे बीच मौजूद है।



(पृष्ठ 23 का शेष)

अनादि काल अनंत गगन
से असीम महिमा मगन
ते तरंग उठे सघन
आनंद नंद नंद रे।

पंजाबियों का प्रेम भी महाकवि टैगोर-साहित्य के साथ देखिए कि सम्पूर्ण टैगोर-साहित्य का पंजाबी में अनुवाद हो चुका है तथा उसे 'पंजाबी साहित्य अकादमी' ने प्रकाशित भी किया है। मैंने खुद भी श्री रवींद्र नाथ टैगोर की जीवनी का पंजाबी में अनुवाद किया है, जिसके मूल लेखक श्री कृष्णा कृपलानी हैं। पंजाबी लेखकों ने 'गीतांजलि' के पंजाबी में कई अनुवाद प्रस्तुत किए हैं। आज भी यह सिलसिला जारी है।



शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा समाज-सेवा

*-डॉ. शमशेर सिंघ**

पृष्ठभूमि : सिक्ख धर्म एक सामाजिक धर्म है। सामाजिक से तात्पर्य है कि इसका क्षेत्र मात्र समाज या समाज के मनुष्यों तक ही सीमित नहीं, इसका अर्थ यह है कि सिक्ख गुरु साहिबान ने समाज में रहकर धर्म कमाने के लिए कहा, न कि समाज का त्याग करके। समाज एक ऐसी इकाई है जिसके अंदर हर प्रकार की मानवीय जरूरतें, परस्पर एकता, भ्रातृत्व-भाव, एक दूसरे की मदद, सेवा आदि सब कुछ ही आ जाता है। समाज से तात्पर्य मात्र एक सीमित दायरे में रहने वाले लोग नहीं, देश, कौम या इसके बाद भी जहां तक इंसान का व्यवहार है, वे सब समाज के दायरे में ही हैं। गुरमति को मानने वाले जहां भी जाते हैं वहीं एक समाज पैदा कर लेते हैं, जिसमें हर प्रकार के लोग होते हैं।

गुरु साहिबान ने अपने समकालीन समाज में रहते सब प्रकार के लोगों के जीवन को देखा, धर्म एवं धार्मिक रस्मों-रिवाजों को देखा और यह परिणाम निकाला कि ये लोग धर्मी होने का दावा तो करते हैं परंतु यह दावा झूठा है। हर प्रकार के कर्मकांड, भेष-पाखंड, वहम-भ्रम भी उनके धर्म का अंग थे। उनकी समाज में सेवा भी धोखा थी। इस प्रकार के सारे ढांचे को गुरु साहिबान ने बदला। वे लोगों में क्रांति लेकर आए। उन्होंने लोगों का मन बदला, व्यवहार बदला, उन्हें नई दिशा दी। इस नई दिशा के लिए जीवन-उद्देश्य बहुत सार्थक, नवीन एवं तंदरुस्त था। गुरु पातशाह ने 'संगतें' कायम की। इनमें उन सच्चे धर्मियों की सेवाएं लीं जिनमें समाज के प्रति सच्ची लगन थी तथा जिनमें नैतिक गुणों का खजाना था। ये 'संगतें' ही बाद में धार्मिक-केंद्र बने। इनके अलावा गुरु साहिबान ने खुद ऐसे धार्मिक-केंद्र स्थापित किये, जिससे समाज को सार्थक एवं सामाजिक दिशा मिल सकती थी। इनको हम 'गुरुद्वारे' कहते हैं। कुछ समय बाद इन गुरुद्वारों के प्रबंध में कई प्रकार की कुरीतियां आ गईं। समाज के अंदर ऐसे सच्चे व निरोल सिक्ख भी थे, जिन्होंने धार्मिक लहर के रूप में लहर चलाई, कुर्बानियां दीं, संघर्ष किया। गुरु ने मदद की। आखिर, सच की जीत हुई, धर्म की जय-जयकार हुई। सिंघ सभा लहर, गुरुद्वारा सुधार लहर या अकाली लहर, जहां एक तरफ धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष कर रही थीं वहीं देशवासियों में कौमी गौरव, स्वाभिमान, इज्जत तथा बुनियादी अधिकार, चाहे वे धार्मिक थे, चाहे सामाजिक, चाहे राजनैतिक, वे इन सभी के लिए सामूहिक रूप से लड़ रही थीं। फिर इन्होंने गुरुद्वारे महंतों से आजाद करवाये।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना: इस संघर्ष का परिणाम यह हुआ कि बीसवीं शताब्दी के आरंभ में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में आई। इसने अपने नियम-उपनियम निर्धारित किए, जिनका उद्देश्य कौम तथा समाज की सेवा था। ऐतिहासिक गुरुद्वारों का प्रबंध अपने हाथों में लेकर इनके जरिए सामाजिक भलाई के कामों को सूचीबद्ध करना

*** गांव व डाकघर शेखूपुरा, जिला पटियाला - १४७००१*

था। यही लक्ष्य गुरु साहिबान का था। आज शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के सेवा के पक्ष मुख्य रूप से निम्नलिखित माने जा सकते हैं :

१. धार्मिक सेवाएं
२. सामाजिक क्षेत्र की सेवाएं
३. शैक्षणिक क्षेत्र की सेवाएं
४. देश-कौम की समूची सेवाएं
५. फुटकल

गुरु नानक साहिब का धर्म सामाजिक धर्म है। इसको भाई गुरदास जी ने 'गुरमुख गाडी राह' (गुरमुखों के चलने वाला) लिखा है। इस राह पर चलने वाला पथिक कोई भी हो सकता है। इस निर्मल पंथ के अंदर जात-पात, अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, छुआ-छूत का भेदभाव नहीं है। जाति-वर्ण का मतभेद सामाजिक कोढ़ है। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ने अपनी सभी संस्थाओं में बिना किसी भेदभाव के समाज में लोगों को एक साथ संगत तथा पंगत में बैठने के साधन कामय किए, जो कि गुरु साहिबान के समय थे। आज शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ने समाज में पुन: उन्हीं रस्मों-रीतियों से सिक्ख रहित मर्यादा कायम की जिससे सामाजिक भेदभाव कम हो सके, आपसी भ्रातृत्व-भाव बढ़ सके, समाज के लोगों में प्यार उत्पन्न हो एवं *"एकु पिता एकस के हम बारिक"* का आदर्श पुन: कायम हो।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी धार्मिक पक्ष से समाज में एक जागृति पैदा करने के लिए अपने मिशनरी कॉलेजों द्वारा रागी, कथावाचक, प्रचारक तथा पाठी सिंघ तैयार करवाती है जो देश-विदेश में जगह-जगह जाकर गुरु-आशय के अनुसार धर्म का सही निरूपण कर सकें। कोई भी धर्म समाज से अलग रहकर प्रफुल्लित नहीं हो सकता और न ही समाज के लोग धर्म-हीन होकर जीवन-उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हैं। धर्म के लिए समाज में रहते लोगों की सारी जीवन-आवश्यकताओं की पूर्ति करनी अति आवश्यक है। समाज में धार्मिक जागृति अति आवश्यक है। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की सभी कार्य-विधियां, नियमों के अधीन हैं, जिसमें हर एक कर्मचारी की सेवाएं निमयबद्ध ढंग से हैं, किसी निजी संस्था की तरह नहीं, जहां एक व्यक्ति की इच्छा पर ही सब कुछ होता है तथा एक व्यक्ति के अनुसार ही सभी कार्य चलते हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ऐतिहासिक गुरुद्वारों में जरूरत के अनुसार सराय, धार्मिक पाठशालायें, हैल्थ-सेंटर, शैक्षणिक संस्थाएं कायम कीं, जिससे संबंधित इलाका निवासी संगत के लिए आवश्यक सेवायें प्रदान कराई जाती हैं। शैक्षणिक क्षेत्र में शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के शैक्षणिक कॉलेज, तकनीकी कॉलेज, मेडिकल कॉलेज तथा मिशनरी कॉलेज आदि आज बड़ी सफलता से चल रहे हैं। इस संस्था का बजट तथा उसमें से अलग-अलग मदों पर खर्च करने की विधि सरकारी संस्थाओं जैसी है। कहने का तात्पर्य, इस संस्था के खर्चे का हर वर्ष ऑडिट होता है, इसी लिए खर्चा निर्धारित मदों के अनुसार ही होता है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अलावा अन्य धार्मिक साहित्य छपवाकर दूर-दराज के क्षेत्रों, देशों-विदेशों में लागत मूल्य पर भेज रही है। इस संस्था द्वारा बड़े स्तर पर नि:शुल्क लिट्रेचर भी बांटा जा रहा है। संस्था द्वारा प्रकाशित 'गुरमति प्रकाश' (पंजाबी), 'गुरमति ज्ञान' (हिंदी) तथा 'गुरुद्वारा गजट' (पंजाबी, अंग्रेजी) मासिक पत्र गुरमति-प्रचार की विशाल स्तर पर सेवा कर रहे हैं।

स्कूलों तथा कॉलेजों की स्थापना पर इनमें सामान्य शिक्षा तथा टेकनीकल शिक्षा देने के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा देने का विशेष प्रबंध किया गया है। इसके अलावा स्कूली बच्चों के

लिए 'धार्मिक परीक्षा' के नाम से हर वर्ष परीक्षा लेकर बच्चों को उत्साहित किया जाता है तथा मैरिट सूची में आने वाले बच्चों को वजीफे के रूप में इनाम भी बांटे जा रहे हैं। गत कुछ वर्षों से आरंभ किए गए 'द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स' भी घर बैठे जिज्ञासुओं को सिक्ख धर्म के प्रति प्रारंभिक जानकारी निःशुल्क प्रदान कर रहा है।

जब कभी भी पंथ पर, कौम पर विपत्ति आती है, उस समय शिरोमणि गु: प्र: कमेटी जरूरतमंदों के लिए हर प्रकार की सहायता का इंतजाम करती है। गरीब परिवारों विवाह-शादी के समय को सहायता प्रदान की जाती है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी समय-समय पंथ या साधारण जनता पर आई तकलीफों के लिए भी अपनी सेवायें प्रदान करती रहती है, जैसे भाढ़-ग्रस्त, दंगा-पीड़ित या अन्य कई बार प्राकृतिक रूप से आई आपदाओं के समय जनता को राहत पहुंचाई जाती है। शिरोमणि गु: प्र: कमेटी अपने बजट में से कुछ ऐसे खर्च भी करती रहती है जिसका मंतव्य उन परिवारों की मदद करना होता है जिनके पास अपनी बच्चियों के अनंद-कारज के लिए पैसे नहीं होते। आर्थिक पक्ष से कमजोर परिवारों या लावारिस बच्चों, बुजुर्गों की जरूरतें पूरी करना तथा यतीम बच्चों की पढ़ाई के लिए मदद करना भी इस संस्था के सेवा-कार्यों में शामिल है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरु साहिबान के प्रकाश-पर्व एवं शहीदी-दिवसों की शताब्दियां मनाईं, विश्व-सम्मेलन करवाया। इसने सिक्ख कौम के अंदर धर्म की जानकारी हेतु कई प्रकार की ऐतिहासिक लिखतें उपलब्ध करवाईं, लिट्रेचर छाप कर सिक्ख धर्म एवं सिक्ख इतिहास के प्रति विस्तृत जानकारी दी, पथ-भ्रष्ट युवकों को धर्म की तरफ प्रेरित करके सही दिशा प्रदान की। यह संस्था लंबे समय से मानवीय एवं कौम के मौलिक अधिकारों की सलामती के लिए संघर्ष करती रहती है। श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन के लिए आए यात्रियों के लिए रेलवे स्टेशन तक आने-जाने तथा अन्य गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन हेतु निःशुल्क बसों का इंतजाम करना, पोस्ट-आफिस की सुविधा तथा रेलवे आरक्षण की सुविधाएं प्रदान करने के लिए कार्यालय प्रदान करना शामिल है। बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने के अलावा अन्य भी कई प्रकार की सेवाएं दर्शनार्थ आई संगत के लिए जारी हैं।

देश से बाहर, जैसे कि पाकिस्तान में ऐतिहासिक गुरुद्वारों के लिए यात्रियों के जाने के लिए सरकार द्वारा सुविधाएं मुहैया कराना, जैसे रेल-सुविधा, सुरक्षा, यातायात के साधन तथा अन्य रहने, खाने-पीने की वस्तुएं आदि भी शामिल हैं। भारतवर्ष में गुरुपर्वों तथा विशेष त्योहारों पर गुरुधाम-यात्रा के लिए विशेष रेल की सुविधाएं प्रदान करने का इंतजाम करना आदि बहुत ही लाभकारी सेवाएं प्रदान की जाती हैं। श्री अमृतसर से दिल्ली तक रेल सेवाओं में की गई बढ़ोत्तरी शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की ही हिम्मत का हिस्सा है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अब तक कई जनरल तथा तकनीकी शिक्षा कॉलेज, मेडिकल कॉलेज खोल कर सिक्ख कौम व देशवासियों की सेवा की है। यह संस्था मेडिकल कॉलेज, अस्पताल तथा डिसपेंसरियां चलाकर जनता की सेवा कर रही है। सिक्ख इतिहास की खोज के लिए सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड कायम करना, सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी, मिशनरी कॉलेज, गुरमति संगीत विद्यालय आदि स्थापित करना शिरोमणि गु: प्र: कमेटी की हिम्मत तथा कौम की सेवा-भावना का सदका ही तो है।

स्त्रियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने की ज़रूरत

-बीबी अंम्रितपाल कौर

एक समय था जब भारत औरत-प्रधान समाज था। ज़मीन-जायदाद औरत के नाम होती थी, यहां तक कि बच्चों के नाम के साथ पिता की जगह पर मां का नाम लिखा जाता था। पुरुष सुचेत हो गया। उसने अपनी सरदारी कायम करने के लिए संघर्ष करना शुरू कर दिया। परिणामत: औरत के अधिकारों को दीमक लगनी शुरू हो गई। मध्य काल में औरत की दशा में इतनी गिरावट आ गई कि उसको पांव की जूती समझा जाने लगा। बौधिक पक्ष से पुरुष के बराबर होने के बावजूद भी उसकी अक्ल को नाकारा गया।

बहुत-से पुराने ग्रंथों में भी स्त्री के बारे में घटिया शब्दों का प्रयोग किया गया है। औरत के प्रति व्याप्त हीन भावना के विरुद्ध सबसे पहले श्री गुरु नानक देव जी ने आवाज़ उठाई कि इस संसार का जन्म, विकास, प्रसार सब स्त्री पर निर्भर करता है। स्त्री से मनुष्य जन्म लेता है और फिर स्त्री के साथ ही सारा जीवन बिताता है, इसलिए यह निंदा करने योग्य नहीं है। श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री की निंदा करने की जगह संसार को उसकी प्रशंसा करने के लिए ज़ोर दिया कि उसने ही राजाओं-महाराजाओं को जन्म दिया तथा वही सारे जगत की जननी है:

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

जैसे-जैसे समय बदलता गया स्त्री ने भी अपने आप को बदलना शुरू कर दिया। आज २१वीं शताब्दी चल रही है। इसे वैज्ञानिक युग भी कहा जाता है। आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमें लड़कियों ने अपनी धांक न जमाई हो, बल्कि वे तो कई क्षेत्रों में पुरुषों को भी पीछे छोड़कर उनसे आगे निकल गई हैं। अक्सर सुनने में आया है कि हर सफल व्यक्ति के पीछे औरत का हाथ होता है। अगर मध्य काल के इतिहास पर नज़र डालें तो कई बहादुर स्त्रियों के नाम सामने आते हैं। सिक्ख धर्म के इतिहास में भी माता गंगा जी, माता गुज़री जी, माता भाग कौर जी, माता सदा कौर जी आदि बहादुर स्त्रियां हुई हैं। भारत को आज़ाद करवाने के लिए रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से बहादुरी से लड़ी। आधुनिक युग में भी मदर टेरेसा जैसी अनेक बहादुर स्त्रियों की समाज-सुधार में अहम भूमिका रही है। जहां खेलों में पी. टी. ऊषा ने सोनपरी का रुतबा जीता, वहीं राजबीर कौर ने हाकी में, सानिया मिर्जा तथा सुनीता कुमारी आदि ने टेनिस में भारत का नाम राष्ट्रीय स्तर के नक्शे पर ला दिया। कल्पना चावला तथा सुनीता विलियम ने भी अंतरिक्ष तक पहुंचकर भारत का नाम ऊंचा किया। हर वर्ष लड़कियां शिक्षा में लड़कों से आगे रहकर प्रथम स्थान प्राप्त कर रही हैं। इतना सब होने के बावजूद भी बड़े खेद की बात है कि समाज की स्त्री के प्रति सोच आज भी मध्य काल वाली ही है।

मध्य काल से ही औरत अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाती आ रही है। अमेरिका की औरतों ने १८५६ ई में पहली बार पुरुषों द्वारा की जाती ज्यादतियों के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। इस बग़ावत का फल उनको न्यूयार्क की पुलिस

से गोलियों के रूप में मिला, जिसमें बहुत सारी औरतों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

अमेरिकन औरतों की कुर्बानी को याद करके १९१० ई में जर्मनी की औरतों ने ८ मार्च को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाने का प्रस्ताव पारित किया। भारत के बंगाल में पैदा हुई बीबी एम. एस. ने औरतों के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई। उसी दिन से ही यह दिन 'स्त्री दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

भारत में औरतों के हक में २६ अक्तूबर, २००६ को एक कानून लागू हुआ। इस कानून के मुताबिक कोई भी पुरुष अपनी पत्नी को जिस्मानी, जुबानी, जज्बाती या आर्थिक रूप से पीड़ित नहीं कर सकेगा। यह अधिकार उस औरत को भी हासिल है जो बिना विवाह किए किसी पुरुष के साथ एक ही छत के नीचे रह रही है। इसके अलावा मां, बहन या घर के अंदर रह रही विधवा के प्रति भी अपने फर्जों की पूर्ति हेतु पुरुष इस कानून के तहत पाबंद रहेगा। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे-३ के अनुसार ३७.२२ प्रतिशत औरतों को घरेलू हिंसा का शिकार होना पड़ता है तथा उनकी इस स्थिति का सबसे बड़ा कारण उनका अल्प शिक्षित होना या अशिक्षित होना है। इस सर्वे के अनुसार पति की हिंसा का शिकार भी सबसे ज्यादा अनपढ़ पत्नी ही होती है। शहरी इलाकों में ३०.४ प्रतिशत तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ४०.२ प्रतिशत औरतें हिंसा का शिकार हैं। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण औरतें शहरी औरतों के मुकाबले हिंसा का ज्यादा शिकार होती हैं। इसमें सबसे ज्यादा संख्या बिहार राज्य की है। दूसरा स्थान राजस्थान तथा तीसरा स्थान मध्य प्रदेश का है। सबसे कम औरतें गोया में हिंसा का शिकार हैं, जहां दर १७ प्रतिशत है। पार्लियामेंट में औरतों की प्रतिनिधता के मामले में भी भारत पीछे है। १८९ देशों में भारत का स्थान १०८वां है। इसके मुकाबले में हमारे पड़ोसी देश चीन का स्थान ४९वां तथा नेपाल का ६३वां है। हमारे अन्य पड़ोसी देशों-- श्रीलंका तथा भूटान की औरतें भारतीय औरतों से भी पीछे हैं। उनका स्थान १२४वां एवं १३१वां है। भारत में चाहे यह कानून अब बना है परंतु अमेरिका में इस कानून को बने हुए कई वर्ष हो चुके हैं।

औरतों को मारना-पीटना एक विश्वव्यापी समस्या है। भारत में इसका मुख्य कारण औरतों का आर्थिक पक्ष से कमजोर होना है, क्योंकि वे पूरी तरह से पुरुषों पर निर्भर होती हैं। इश्तिहारबाजी में भी औरतों का प्रयोग किया जा रहा है। औरतों को चाहिए कि वे खुद सुचेत हों और इसके विरुद्ध आवाज़ उठाएं। चाहे आज़ाद भारत में शिक्षा की बढ़ोत्तरी से औरतें सुचेत हुई हैं परंतु वैज्ञानिक युग होने के बावजूद अभी भी औरतें अंधविश्वासों एवं धार्मिक संकीर्णवाद में फंसी हुई हैं। आधुनिक युग में मनुष्य की आर्थिक जरूरतें बहुत बढ़ गई हैं, किंतु साधन इतने नहीं हैं जिससे ये सारी जरूरतें पूरी की जा सकें, इसलिए औरतें भारी मानसिक तनाव से गुज़र रही हैं। वे इसके सही कारण ढूंढने की जगह तथाकथित साधुओं-संतों तथा डेरेदारों की शरण ले रही हैं, परिणामत: जगह-जगह अंधविश्वासी बाबाओं के डेरे प्रफुल्लित हो रहे हैं। इन तथाकथित बाबाओं द्वारा महिलाओं का आर्थिक शोषण करने के अलावा शारीरिक शोषण करने की ख़बरें भी अख़बारों में आती ही रहती हैं।

माता-पिता को चाहिए कि वे लड़कियों को शुरू से इस योग्य बनायें कि उनको किसी पर भी निर्भर न होना पड़े। वे अपनी सुरक्षा खुद करने के योग्य हों। लड़कियों को यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि वे लड़कों से किसी पक्ष से कमज़ोर हैं। उनको केवल रसोई का श्रृंगार बनकर नहीं रहना चाहिए, बल्कि व्यवसाय

सम्बंधी कोर्स भी करने चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें। ज़िंदगी से दुखी होकर आत्म-हत्या करना इन सब समस्याओं का समाधान नहीं। औरतों को ज़िंदगी की हर मुश्किल का डटकर मुकाबला करना चाहिए।

औरतों को स्त्री संगठन बनाकर अपने अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए, किंतु देखने में आया है कि कुछ औरतें उनका साथ नहीं देतीं। आज औरतों को अपने अधिकार पाने के लिए संगठित होना पड़ेगा। प्राचीन समय में लड़की को जन्म के बाद मारा जाता था और अब उसको जन्म से पहले ही मार दिया जाता है। भारत में कई जिले ऐसे हैं जिनमें एक हज़ार पुरुषों के पीछे औरतों की गिनती ८०० से भी कम है। इस भयानक कुरीति के विरुद्ध आज औरत को ही आवाज़ उठानी पड़ेगी तो ही वो अपने अस्तित्व को बचा सकेगी। ८ मार्च का दिन औरतों को अपने अधिकारों के बारे में सोचने का मौका देता है तथा पुरुषों को भी निमंत्रण देता है कि वे भी औरतों के प्रति अपनी सोच बदलें और उनके प्रति सार्थक सोच को अपनायें!

('गुसईआं' (पंजाबी पत्रिका) से धन्यवाद सहित)



कविता

अब क्या बोया, खुद ही जान

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

माया छोडूं प्रभु को पाऊं, पहले होता था अरमान।
मंज़िल है अब दौलत-शोहरत, सीढ़ी-मात्र दिखें भगवान।
सद्गुण-दुर्गुण नहीं कसौटी, 'मठाधीश' को मिलता मान।
पूजा जाता वस्त्र विशेष, भीतर चाहे हो शैतान।
दो रोटी भूखे को मुश्किल, भरे पेट को मिलता 'दान'।
ज़िंदा लोगों की बेकदरी, मुर्दों को मिलता सम्मान।
इक-दूजे को रौंद-रौंदकर, बनना चाहें सब धनवान।
दौलत ही दौलत को खींचे, मेहनतकश होता हलकान।
नई-नई तकनीकें आईं, पग-पग पर फैला विज्ञान।
तथ्यों से भरपूर है बुद्धि, लेकिन हृदय बड़ा सुनसान।
नहीं घरौंदों में अपनापन, केवल भरा हुआ सामान।
खबरें हम पर अंतरिक्ष की, लेकिन अपनों से अनजान।
जिन्होंने पाला उनको ही, संताप दे रही है संतान।
भोगवाद के रस्ते में अब, माता-पिता लगते व्यवधान।
जंगल को इतना लीला कि, हुआ जंगली खुद इंसान।
मानवता को चीर-फाड़कर, पीता लहू बना हैवान।
भले आज यह मस्ती कर ले, लेकिन सुन ले खोल के कान।
पिछला बोया काट रहा है, अब क्या बोया, खुद ही जान!



कविता

नशामुक्त समाज

*-श्री सुरजीत दुखी**

शराब पीना एक अभिशाप है।
इस मर्म से भरी हर, धार्मिक किताब है।
इसने कितने बसते परिवार तबाह किये हैं,
ज़िंदगी के अनुपात में यह बेहिसाब है।
कहीं नशे में मनुष्य चूर होता है।
न कोई लाज, शर्म और न नूर होता है।
इसके प्रभाव में मनुष्य क्या-क्या करता है,
नशा उतर जाने पर, उतरा सरूर होता है।
कहता है, हालत में सुधार लाने के लिए, शराब पीता हूं।
गम मिटाने और समस्याएं सुलझाने के लिए, शराब पीता हूं।
नशा उतर जाने पर समस्याएं, वैसी ही बनी रहती हैं।
शरीर की हालत बिगड़ती है और दुनिया शराबी कहती है।
नशा भांग, चरस, समैक और तंबाकू का भी होता है।
मन, बुद्धि और शरीर भी इससे, शिथिल होता है।
नशा करने के लिए कभी कोई, बहाना ढूंढा जाता है।
जब इंसान आदी हो जाता है, तो नशा सुबह के साथ आता है।
मां, बहिन, बेटी की आबरू, सेफ नहीं रहती।
पत्नी पति को, भला-बुरा भी है कहती।
कहीं लड़की की शादी की चिंता सताती है।
कहीं घर की बर्बादी साफ नज़र आती है।
नशे की लत वाला, हर बुरा काम करता है।
चोरी करता है, मांगता है, बुरी मौत मरता है।
शराब के ठेके व दुकानें और जो अहाते हैं।
सच है कि स्त्री जाति को ये खूब रुलाते हैं।
समाज के ठेकेदार, नशा छुड़ाने की बात, बता रहे हैं।
इस कलंक को दूर कर, नशामुक्त समाज की, तसवीर बना रहे हैं।
कुछ समझदार लोग, समाज को सुधारने का, नारा लगा रहे हैं।
मगर कुछ अब भी हैं, जो सब कुछ को धता बता, जीवन मयखाने में बिता रहे हैं।
जब तक सरकार और समाज का, मन, वचन और कर्म एक नहीं होगा।
दूसरे बहुत-से नारों की तरह, 'नशा छुड़ाओ अभियान' का भी, यही हाल होगा।
आओ, 'नशा छुड़ाओ' नारे का आगाज़ हम, नेक नीयत से करें।
इस अभियान को हम अपने घर, महल्ले और नगर से शुरू करें।
इस तरह हम हर गांव के, घर-घर तक पहुंच जायेंगे।
मन, वचन और कर्म को एक कर, इस अभियान में सफल हो पायेंगे।
तब संस्कृति, सभ्यता और सामाजिक न्याय की, रक्षा हो जायेगी।
स्वास्थ्य, सभ्य और परहित वाले समाज की, रचना हो जायेगी!
देश का कोई भी परिवार नशे की भेंट नहीं चढ़ेगा!
'दुखी' फिर न दुख रहेगा, प्रभु-नाम का रंग चढ़ेगा।



**३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौरी गेट, श्री अमृतसर। मो: ९९१४५३१२२१*

गुरमति संगीत सम्बंधी स्रोत सूचना

-डॉ. गुरमेल सिंघ*

* अमनदीप कौर, पंजाब दी गुरमति संगीत परंपरा, पंजाब दा संगीत जगत, लोकगीत प्रकाशन, चंडीगढ़, २००८
* अवतार सिंघ, गुरचरन सिंघ रागी, गुरबाणी संगीत : प्राचीन रीत रतनावली (दो भाग), पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९७९
* ए. एस. गोसल, सिक्ख धर्म अते संगीत, पंजाब स्टेट टैकस्ट बुक बोर्ड, चंडीगढ़, १९८२
* सरवण सिंघ 'गंधरव' (संत), सुर सिमरन संगीत (सात भाग), सिंघ ब्रॉदर्स, श्री अमृतसर, जनवरी २००६
* सिम्रती ग्रंथ ७वां अदुत्ती संगीत सम्मेलन, १९९७ (संपादन) डॉ. गुरनाम सिंघ, विसमाद नाद, लुधियाना, १९९७
* शाम सिंघ (उसताद), ईशर संगीत हारमोनीअम ते तबला गाईड, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, दिसंबर २००६
* सुखवंत सिंघ (भाई), गुरू नानक संगीत पधती ग्रंथ : ३१ शुद्ध ते ३१ मिश्रित राग (दो भाग), विसमाद नाद, लुधियाना, २००३
* सुखवंत सिंघ (प्रिं:), राग सरूप निरणै श्री गुरु ग्रंथ साहिब, गुरुद्वारा गुर गिआन प्रकाश जवद्दी टकसाल, लुधियाना, २००७ (दूसरी बार)
* सुंदर सिंघ (प्रो:), हारमोनीअम कीरतन सिक्खिआ ते तबला गाईड, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, तिथिहीन
* हरदेव सिंघ दीवाना (भाई), जीवन सरल कीरतन सिक्खिआ (२ भाग), भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, जुलाई २००७
* हरबंस सिंघ (ज्ञानी), निरबाण कीरतन, सिंघ ब्रॉदर्स, श्री अमृतसर, अप्रैल १९७६
* करतार सिंघ (प्रो:), गुरबाणी संगीत दरपण, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर, जुलाई १९९६ (पहली बार), फरवरी २००२ (चौथी बार)
* करतार सिंघ (प्रो:), गुरु अंगद देव संगीत दरपण, धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणि गु: प्र: कमेटी), श्री अमृतसर, जुलाई २००४
* करतार सिंघ गरेवाल, गुरबाणी कीरतन, निरंजन सिंघ एण्ड संस, श्री अमृतसर, १९४९
* कीरतन विशेष अंक (सिम्रती ग्रंथ), १४वां अदुत्ती गुरमति संगीत सम्मेलन-२००५, गुरुद्वारा गुर गिआन प्रकाश, जवद्दी टकसाल, लुधियाना
* कुलवंत सिंघ चंदन (प्रो.), आसा दी वार-ढुकवें शबदां सहित, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, मार्च २००३
* कुलवंत सिंघ चंदन (प्रो), सिक्ख संगीत रीत तबला वादन, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, मार्च २००४
* कुलवंत सिंघ चंदन (प्रो), सरल सिक्ख संगीत रीत, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, जुलाई २००२
* गिआन सिंघ ऐबटाबाद, गुरबाणी संगीत (दो भाग), शिरोमणि

*श्री गुरु ग्रंथ साहिब अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९०४१०-४६३७२

गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर, १९८१ (तीसरी बार), १९९३ (चौथी बार), १९९६ (पांचवीं बार)

* गुरनाम सिंघ (डॉ.), आदि ग्रंथ राग कोश, पवित्र प्रमाणिक प्रकाशन, त्रिपती, पटियाला, तिथिहीन
* गुरनाम सिंघ (डॉ.), गुरशबद कीरतन, गुरमति संगीत प्रकाशन, पटियाला, २००५
* गुरनाम सिंघ (डॉ.), गुरमति संगीत : विभिन्न परिपेख, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९९५
* चरनजीत सिंघ (संत), नवीन गुरमति संगीत, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, १९६२ (पहली बार), जनवरी २००२ (तीसरी बार)
* जबरजंग सिंघ (प्रो.), श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे ३१ निरधारित रागां 'च टकसाली कीरतन शैली, श्री गुरु रामदास गुरमति संगीत अकादमी, चंडीगढ़, अक्तूबर २००१
* जागीर सिंघ (डॉ.), गुरु नानक देव जी ते संगीत, लोकगीत प्रकाशन, चंडीगढ़, २००७
* जागीर सिंघ (डॉ.), कावि ते संगीत: गुरबाणी परिपेख, अजीत सिंघ लांबा, पंजाबी पब्लिकेशन, पटियाला, २००४
* जगीर सिंघ (डॉ.), फ़रीद-बाणी : संगीतक परिपेख, पंजाबी पब्लिकेशन, पटियाला, तिथिहीन
* डी. एस. नरूला, आदि ग्रंथ दा संगीतक परीचै, लिट्रेचर हाऊस, पुतलीघर, श्री अमृतसर, १९९१
* तारा सिंघ (प्रो.), श्री गुरु ग्रंथ गाइन राग रतनावली, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९९१
* तारा सिंघ (प्रो.), श्री गुरु तेग बहादर राग रतनावली, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला १९९६ (१९७६, पहली बार)
* तारा सिंघ (प्रो.), गुरु अमरदास राग रतनावली, लोक संपर्क विभाग, पंजाब, मई १९७९
* तारा सिंघ (प्रो.), गुर अमरदास राग रतनाकर, गुरमति संगीत फांउडेशन, पटियाला, २००८
* तारा सिंघ (प्रो.), गुरु अरजन देव राग रतनावली, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला २०००
* तारा सिंघ (प्रो.), गुरू गोबिंद सिंघ राग रतनावली, अमृत कीर्तन ट्रस्ट, चंडीगढ़ १९९४
* तारा सिंघ (प्रो), भगत राग रतनावली (संपादक) सुरजीत कौर-- गुरनाम सिंघ (डॉ.), गुरमति संगीत प्रकाशन, पटियाला १९९२
* दिआल सिंघ (प्रिं.), गुरमति संगीत सिक्खिआ, गुरु नानक विद्या भंडार ट्रस्ट, नई दिल्ली, अगस्त १९९९ (दूसरी बार), १९९६ (पहली बार)
* दिआल सिंघ (प्रिं.), गुरमति संगीत सागर, गुरु नानक विद्या भंडार ट्रस्ट, नई दिल्ली, १९९६, (फरवरी १९८८, पहली बार)
* देविंदर सिंघ विद्यार्थी, कीरतन संदरभ ते सरूप, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, १९९२
* देविंदर सिंघ विद्यार्थी (डॉ.), गुरबाणी दे राग संबोध अते सारथकता, सिक्ख इहितास खोज विभाग, खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर, १९८६
* धनवंत सिंघ सीतल (ज्ञानी), गुरबाणी संगीत, सीतल साहित भवन, श्री अमृतसर, १९५३ (दूसरी बार)
* पिआरा सिंघ पदम, श्री गुरू ग्रंथ संगीत प्रबंध, श्री गुरु ग्रंथ प्रकाश, कलम मंदिर, लोयर माल पटियाला, १९९० (दूसरी बार), १९७७, (पहली बार)
* प्रभजोत कौर (सवर-समुंद), सुर-इंद्रावली शबद रीत रतनावली, सिंघ ब्रॉदर्स, श्री

अमृतसर, दिसंबर २००८

* बचित्तर सिंघ, अजैब सिंघ (रागी), हारमोनीअम टीचर, भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ, श्री अमृतसर, २००५
* मनजीत कौर, गुरमति संगीत परंपरा, टवैनटी फस्ट सेंचुरी पब्लिकेशन, पटियाला, तिथिहीन
* मनोहर सिंघ वनजोत (प्रो), कीरतन दी दात (दो भाग), नेशनल बुक डिपो, दिल्ली २००६
* रघबीर सिंघ, संगीत सिक्खिआ : गावहु सची बाणी, आर सी पब्लिशर्ज, चांदनी चौंक, दिल्ली, १९९८
* रागमयी गुरमति संगीत समागम सिम्रिती ग्रंथ, (संपादक) गुरप्रीत सिंघ, गुरुद्वारा गुर गिआन प्रकाश, जवद्दी कलां, लुधियाना, दिसंबर १९८१
* वरिंदर कौर पदम (डॉ), गुरमति संगीत दा संगीत विगिआन, अमरजीत साहित प्रकाशन, पटियाला, २००५

अंग्रेजी स्रोत

* Daljeet Singh, Sikh Sacred Music, Diljeet Singh, College Road, Civil Lines, Ludhiana, 1995
* Gurnam Singh, Sikh Sacred Music : Gurmat Sangeet, Gurmat Parkashan, Patiala, 2008
* Michal Nijhwan, Dhadi Darbar Religion: Violence and The Performance of The Sikh History, Oxford University Press, 2006

पत्रिकाएं तथा उनमें आलेख

* अजीत सिंघ पैंटल (डॉ), 'श्री गुरू ग्रंथ साहिब दे राग ते रीतां', नानक प्रकाश पत्रिका, (संपादक) डॉ तारन सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, दिसंबर १९७६, पृष्ठ ९५, ९९
* समाजक विगिआन पत्र, अंक ५१, दिसंबर २००३, गुरमति संगीत विशेष अंक, (संपादक) धनवंत कौर, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, २००४
* दविंदर सिंघ विदिआरथी (डॉ), श्री गुरू ग्रंथ साहिब ते राग, गुरु ग्रंथ विचार सम्मेलन अंक, (संपादक) ज्ञानी गुरदित्त सिंघ, केंदरी श्री गुरु सिंघ सभा, श्री अमृतसर, अप्रैल १९७६, पृष्ठ ३००-३२६
* पिआरा सिंघ पदम, ' श्री गुरु ग्रंथ साहिब दा संगीत प्रबंध', उपरोक्त, पृष्ठ ३२७-३४१

अंग्रेजी पत्रिकाएं

* Kirpal Singh, 'Musicology of Guru Granth Sahib, perspectives on Guru Granth Sahib, (Ed.) Dr. Balwant Singh (Dhillon), Guru Nanak Dev University, Sri Amritsar, 2003

शोध निबंध/शोध प्रबंध

* दलजीत सिंघ, गुरमति संगीत दे अप्रचलित राग : विशलेषणातमक अधिऐन, (निगरान) डॉ गुरनाम सिंघ, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९९३-९४ (शोध निबंध)
* कुलबीर कौर, गुरु नानक बाणी ते संगीत, (निगरान) डॉ जसबीर सिंघ साबर, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८०-९० (शोध निबंध)
* रुपिंदर कौर बैंस, गुरबाणी संगीत : भारती एकता दा प्रतीक, (निगरान) डॉ परोमिला जेतली, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८४ (शोध निबंध)
* वरिंदर कौर, गुरमति संगीत दी कीरतन परंपरा : विगिआनक अधिऐन, (निगरान) डॉ गुरनाम सिंघ, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला, नवंबर २००३ (शोध प्रबंध)

हिंदी

* रश्मि जौहरी (श्रीमती), श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उपलब्ध भक्ति संगीत की सरस अवधारणा : एक सांगीतिक अध्ययन, (निगरान) श्रीमती अनीता जौहरी, महात्मा ज्योतिबा फूले रुहेलखंड यूनीवर्सिटी, बरेली, २००५ (शोध प्रबंध)

अंग्रेजी

* Ranjeet Kaur, The Mature and The Place of Pictures Based on Ragas in Shri Guru Granth Sahib its Affinity with the other pictures based on Indian Music, (Superviser) Santosh Chauhan, Kurukshetra University, Kurukshetra, 1995



(पृष्ठ 14 का शेष)

निकलता था। 'होले महल्ले' के जलूस की प्रथा अब तक जारी है। इस प्रकार प्रतीत होता है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुलामी एवं हकूमती जब्र के विरुद्ध लोगों के मन में उत्साह और कुर्बानी का जज्बा भरने के लिए 'होली' को 'होले' का रूप प्रदान किया।

यहां पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि उस समय हिंदोस्तानी लोगों को शस्त्र धारण करने, घुड़सवारी करने एवं दसतार सजाने पर प्रतिबंध था। दसतार केवल वही सजा सकता था जिसको बादशाह द्वारा दरबारी बख्शी जाए। घोड़े की सवारी, निशान, नगाड़ा एवं सेना रखना हकूमत के विरुद्ध बगावत करने के समान था जिसकी सजा मौत और घर-घाट का सफाया था। आम जनता हकूमती अन्याय के विरुद्ध मुंह नहीं खोलती थी। गुरु जी ने लोगों को मानसिक रूप से बलवान बनाने का हर संभव प्रयत्न किया। प्रचलित त्यौहारों को नये ढंग से मनाना इसी श्रृंखला की कड़ी है जिनको आम जनता घटिया एवं प्राचीन रिवायतों के अनुसार मनाती चली आ रही है। अब तेगें-तलवारें, निशान, नगाड़े एवं घोड़ों के नज़ारे खालसे के त्यौहार बन गए। हकूमत की नजरों में संगीन जुर्म समझी जाती 'जंगी वस्तुएं' खालसे के लिए खेल का सामान बन गए। नतीजतन, गुलामी की दुर्गंध से लोगों का दम घुटने लगा और वे जब्र-जुल्म के विरुद्ध लड़ने के लिए मैदान-ए-जंग में निकल पड़े।

उपरोक्त सारी विचार-चर्चा का उद्देश्य मात्र यही दर्शाना है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने किस तरह लोगों की मानसिकता में 'चढ़दी कला' (तैयार-बर-तैयार रहने) का एहसास जागृत करके उनको जुल्म एवं अन्याय के विरुद्ध लड़ने के योग्य बनाया; किस तरह दबे-कुचले एवं साहसहीन लोगों में नई रूह फूंक कर उनको गर्व के साथ जीना सिखाया। यह सब गुरु जी की सकुशल अगुआई द्वारा ही संभव हो सका।

आधुनिक समय में 'होले महल्ले' की मूल भावना को प्रदर्शित करने की परम आवश्यकता है। समाज में प्रचलित हो चुकी अनेकों प्रकार की बुराइयों एवं कुरीतियों की गुलामी से छुटकारा पाने के लिए लोगों के मन में चेतना पैदा करनी चाहिए। लोगों की भावनाओं को व्यर्थ के स्वार्थों की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करने की बजाए उनको हक, सच और इंसाफ की स्थापित के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है; यही खालसे का सदीवी उद्देश्य तथा 'होले महल्ले' का संदेश है।



गुर सिखी बारीक है . . . १२

-डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ*

प्रेम हर गुरसिक्ख के लिये एक अवस्था है। प्रेम कोई कृत्य या कर्तव्य नहीं है। गुरसिक्ख का परमात्मा के प्रति प्रेम उसे ऐसी उच्चता पर पहुंचा देता है कि उसके जीवन का ढंग ही बदल जाता है और उसमें सद्गुण दृढ़ होने लगते हैं। प्रेम की शक्ति की सिक्ख गुरु साहिबान ने समग्र पहचान की तभी उसे सर्वोच्च स्थान प्रदान किया। गुरसिक्ख की इस प्रेम अवस्था का वर्णन भाई गुरदास ही ने बड़े जी सारगर्भित ढंग से किया है :

गुरसिखा साबास जनमु सवारिआ।
गुरसिखां रहरासि गुरू पिआरिआ।
गुरमुखि सासि गिरासि नाउ चितारिआ।
माइआ विचि उदासु गरबु निवारिआ।
गुरमुखि दासनि दास सेव सुचारिआ।
वरतनि आस निरास सबदु वीचारिआ।
गुरमुखि सहजि निवासु मन हठ मारिआ।
गुरमुखि मनि परगासु पतित उधारिआ।

(वार २२: १९)

मन में परमात्मा का प्यार धारण करने वाले गुरसिक्ख का जीवन सफल हो जाता है। वह प्रतिपल परमात्मा को अपनी चेतना में रखता है और मोह-माया से विरत रहकर जीवन व्यतीत करता है। उसके मन से अहम् मिट जाता है तथा विनम्रता का भाव आ जाता है। गुरसिक्ख बिना किसी आशा के अपना कर्म करता है और सतिगुरु की शिक्षाओं का पालन करता है। मन उसे अपने वश में करके भ्रमित नहीं कर पाता जिससे वह सहज जीवन जीता है। उसके मन में ज्ञान का प्रकाश होने से वह अन्य लोगों को भी सुमार्ग पर लाने में सफल होता है।

जिसके मन में परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य का प्रेम बस रहा है, वह उस विवाहिता स्त्री की तरह है जो अपने पति को भुला कर किसी पर पुरुष के प्रेम में लीन है। जिस तरह समाज में पराये पुरूष से प्रेम रखने वाली स्त्री अपमानित और प्रताड़ित होती है, उसी तरह परमात्मा को भुलाकर सांसारिक सम्बंधों एवं वस्तुओं के मोह मे बंध जाने वाले को आध्यात्मिक स्तर पर दुख सहने पड़ते है :

मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥
पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु॥
त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ॥
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ॥

(पन्ना ८९)

मन के हठ को मानने वाली ऐसी स्त्री को अपविता, बुरे लक्षणों वाली, कुरूप, अहित करने वाली कहा गया है। इसी तरह जो जीव परमात्मा के प्रेम में लीन नहीं है उसकी सारी सुंदरता, अलंकरण, धन-सम्पत्ति, परिवार, पद आदि व्यर्थ हैं और उसे गुणहीन ही कहा जायेगा। माया-मोह परमात्मा को विस्मृत कर देते है, उससे दूर कर देते हैं, किंतु परमात्मा का प्रेम हमें न तो संसार से दूर करता है और न ही परिवार से। परमात्मा का प्रेम ही हमें सिखाता है कि कैसे

* *ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो ९४१५९६०५३३*

"*माइआ विच उदास*" अर्थात् माया की चेरी न बनते हुए भी उसे सुगम जीवन-यापन के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है और किस तरह "*वरतनि आस निरास*" अपेक्षा रहित रहकर आशापूर्ण जीवन जिया जा सकता है। परमात्मा का प्रेम यह भी सिखाता है कि किस तरह बिना कठोर उपायों के सहज रहकर भी मन की चंचलता को वश में किया जा सकता है।

परमात्मा का प्रेम इस तरह सराबोर करने वाला है कि जिसे लग गया वह सदैव इसमें डूबे रहना चाहता है :

वधु सुखु रैनड़ीए प्रिअ प्रेमु लगा ॥
घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा ॥
पग धूरि बांछउ सदा जाचउ नाम रसि बैरागनी ॥
प्रिअ रंगि राती सहज माती महा दुरमति तिआगनी ॥
गहि भुजा लीन्ही प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा ॥
बिनवंति नानक धारि किरपा रहउ चरणह संगि लगा ॥१॥ (पन्ना ५४४)

जीव को स्त्री के रूप में प्रतिबिंबित करते हुए प्रेम की परमात्मा से जोड़ने वाली अवस्था का बड़ा ही सुंदर वर्णन श्री गुरु अरजन देव जी ने उपरोक्त वचन में किया है। परमात्मा के प्रेम में रम गई (जीव) स्त्री यह कामना करती है कि प्रियतम परमात्मा से मिलन की यह रात अधिक से अधिक लंबी हो जाये ताकि वह उससे भरपूर प्रेम कर सके और उसका सुख पा सके। ऐसी रात में नींद आना दुखदायी होता है, इसलिए वो यह कामना भी करती है कि नींद कम से कम हो जाये ताकि वह प्रियतम के चरणों की धूल से स्वयं को निहाल कर सके। इससे उसके सारे अवगुणों का नाश हो जाता है और ऐसी प्रेम में भीगी हुई (जीव) स्त्री को परमात्मा स्वयं बांह पकड़कर अपनी दिशा दिखा देता है।

परमात्मा से प्रेम करके एक गुरसिक्ख पूर्णता को पा लेता है और उसका सम्पूर्ण परिमार्जन हो जाता है :

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान ॥
जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ॥ (पन्ना ४५)

परमात्मा का प्रेम ज्ञान प्रदान करने वाला है। गुरसिक्ख को भले-बुरे का अंतर करना आ जाता है। उसे अपनी राह, अपना उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है, जिससे वह सारे संशयों से मुक्त हो जाता है। जीवन का कठोर सत्य उसके सामने उजागर हो जाता है :

का की माई का को बाप ॥
नाम धारीक झूठे सभि साक ॥१॥
काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥
मिलि संजोगि हुकमि तूं आइआ ॥रहाउ॥
एका माही एका जोति ॥
एको पवनु कहा कउनु रोति ॥२॥
मेरा मेरा करि बिललाही ॥
मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥३॥ (पन्ना १८८)

एक गुरसिक्ख सांसारिक संबंधों की वास्तविकता को जान लेता है कि ये सारे सम्बंध परमात्मा की आज्ञा से ही बने हुए हैं। उसका वास्तविक और स्थायी सम्बंध परमात्मा से ही है। मनमुख, जो परमात्मा और उसके ज्ञान से दूर है, अपने और अपने सम्बंधियों की मृत्यु से सबसे अधिक भयभीत रहता है, जबकि गुरसिक्ख जानता है कि सभी एक ही माटी के बने हुए हैं, जिन्हें एक दिन परम ज्योति में समा जाना है। वह मृत्यु के भय से मुक्त होकर सहजता प्राप्त कर लेता है। गुरसिक्ख जीवन के अर्थ को जानता है और

इसीलिए सुख में रहता है :

गुरमुखि आपु गवाइ आपु पछाणिआ।
गुरमुखि सति संतोखु सहजि समाणिआ।
गुरमुखि धीरजु धरमु दइआ सुख माणिआ।
गुरमुखि अरथु वीचारि सबदु वखाणिआ।
गुरमुखि होदें ताण रहै निताणिआ।
गुरमुखि दरगह माणु होइ निमाणिआ ॥
(भाई गुरदास जी, वार १९:१३)

भाई गुरदास जी कहते हैं कि गुरसिक्ख ज्ञान जागृत होने के कारण भरपूर बल होते हुए भी स्वयं को बलहीन, सम्मानयोग्य होते हुए भी स्वयं को निम्न समझता है। उसमें धैर्य, दया और धर्म को धारण करने की क्षमता आ जाती है जिससे संतोष का भाव उत्पन्न होता है और सुख प्राप्त होता है। भाई गुरदास जी कहते हैं कि गुरसिक्ख अपने आप को जानने लगता है कि वह कौन है और यह जानना कि वह अन्य सभी की भांति परमात्मा के हुक्म से ही अस्तित्व में आया है और मूलतः उसी परम ज्योति का ही अंश है तो उसमें सहजता आ जाती है।

परमात्मा का प्रेम गुरसिक्ख को इतना ऊंचा उठा देता है कि वह सुशोभित हो जाता है। भले ही उसके पास धन-सम्पत्ति, सुविधाएं पारिवारिक शक्ति, पुस्तकों का ज्ञान न हो फिर भी वह ज्ञानवान और सामर्थ्यवान बन जाता है, क्योंकि परमात्मा उसकी बात को जानता है :

जिन अंदरि प्रीति पिरंम की जिउ बोलनि तिवै सोहंनि ॥
नानक हरि आपे जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरंनि ॥२॥ (पन्ना ३०१)

परमात्मा के प्रेम ने ही कितने ही संतों-महात्माओं को सम्मानीय बना दिया जिनका जीवन और जिनकी बाणी सैकड़ों वर्षों बाद भी पूरी मानव जाति के लिये प्रेरणा का स्रोत है। भाई गुरदास जी ने गुरसिक्ख को *'पतित उधारिआ'* अर्थात् भटके लोगों का उद्धार करने वाले की संज्ञा दी। प्रेम करने वाले की अपनी कोई दृष्टि नहीं रहती, अपनी कोई बुद्धि और सामर्थ्य नहीं रहती। प्रेम करने वाला परमात्मा की ही दृष्टि और ज्ञान को अपनी दृष्टि और ज्ञान बना लेता है। जो परमात्मा को भला लगता है वही उसकी पसंद हो जाती है :

अंजनु तैसा अंजीऐ जैसा पिर भावै ॥
समझै सूझै जाणीऐ जे आपि जाणावै ॥
आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ लेवए ॥
करम सुकरम कराए आपे कीमति कउण अभेवए ॥
तंतु मंतु पाखंडु न जाणा रामु रिदै मनु मानिआ ॥
अंजनु नामु तिसै ते सूझै गुर सबदी सचु जानिआ ॥४॥ (पन्ना ७६६)

गुरसिक्ख अपनी नहीं परमात्मा की सूझ से जीवन में व्यवहार करता है। उसके मन में परमात्मा के प्रति प्रेम और विश्वास है, इसलिए वह परमात्मा के न्याय को मानता है और किसी भी तरह के पाखंड, तंत्र-मंत्र में नहीं पड़ता। वह स्वयं को कैसे गुरसिक्ख कह सकता है जो सतिगुरु के वचनों से सच को नहीं समझ पा रहा है; जो अपने मूल को, परमात्मा के मार्ग को नहीं पहचान पा रहा है, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष सिर निवाकर माथा टेकने के बाद भी कहीं और अपनी आशा को जोड़ता है? यदि मन में परमात्मा के प्रति प्रेम हो तो परमात्मा स्वयं उसे समझ देता है और उसकी समझता है। परमात्मा उसे यह भी समझ देता है कि होता वही है जो परमात्मा को भला लगता है। यही बात गुरसिक्ख के मन में संतोष और सहजता प्रदान करती है। निरंतर परमात्मा की प्रीति बढ़ती

जाती है :

बिसरत नाहि मन ते हरी ॥
अब इह प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी ॥रहाउ॥
बूंद कहा तिआगि चात्रिक मीन रहत न घरी ॥
गुन गोपाल उचारु रसना टेव एह परी ॥
महा नाद कुरंक मोहिओ बेधि तीखन सरी ॥
प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी ॥ (पन्ना ११२१)

गुरसिक्ख के मन में परमात्मा के प्रेम का भाव इतना प्रबल होता जाता है कि अन्य सभी के प्रति प्रीति लुप्त होती जाती है। परमात्मा का प्रेम ही उसे मनमोहक लगता है, शेष किसी ओर वह देखता भी नहीं है। परमात्मा के प्रेम और सिमरन की उसे लत लग जाती है। इस भाव को वह गांठ बांधकर रखता है। प्रेम उसकी दिनचर्या है। सोते-जागते, उठते-बैठते, परमात्मा का प्रेम ही उसमें प्रकट होता रहता है :

अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥
संगि चलन कउ तोसा दीन्हा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥१॥
अवर बिसारी बिसारी ॥
नाम दानु गुरि पूरै दीओ मै एहो आधारी ॥१॥रहाउ॥
दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि सम्हारी ॥
नाम दि्रड़ु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥२॥ (पन्ना ४०१)

उपरोक्त वचन के अनुसार परमात्मा का प्रेम गुरसिक्ख को ऐसी अवस्था में ले आता है जिसमें कभी भी प्रेम कम नहीं होता। बाहर या अंदर, सोते समय या जागृत अवस्था में, दुख में या सुख में हर समय परमात्मा का प्रेम सदैव जीवन का आधार बना रहता है। परमात्मा के अतिरिक्त शेष सभी आधार विस्मृत हो जाते हैं। ऐसे गुरसिक्ख अपना जीवन तो सफल करते ही हैं समाज के भी पथ-प्रदर्शक बनते हैं, जिससे उन्हें आदरपूर्ण स्थान मिलता है :

सुतिआ गुरु सालाहीऐ उठदिआ भी गुरु आलाउ ॥
कोई ऐसा गुरमुखि जे मिलै हउ ता के धोवा पाउ ॥ (पन्ना ७५८)



अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें। -संपादक।

गुरबाणी चिंतनधारा : ५६

सुखमनी साहिब की विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥
करन करावनहार सुआमी ॥
सगल घटा के अंतरजामी ॥
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥

तीसरी असटपदी की सातवीं पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी हरि-नाम को ही अमूल्य एवं अविनाशी बताते हुए, प्रभु की सर्वव्यापकता का एहसास करवाते हुए पावन फरमान करते हैं कि हे प्रभु! तेरा नाम निर्धन व्यक्ति के लिए धन है, निराश्रियों के लिए आश्रय है। सम्मान रहित मनुष्य के लिए तेरा 'नाम' ही उसका मान-सम्मान तथा उसकी प्रतिष्ठा है। असल में परमेश्वर ही सर्वस्व है, समस्त प्राणियों को दातें बख्शने वाला है। हे परमेश्वर! तू सारे प्राणियों के दिल की जानने वाला अंतरयामी है। तू ही सब कुछ करने एवं करवाने वाला है। हे मालिक! तू स्वयं की स्थिति एवं तारीफ अर्थात् तेरी मर्यादा खुद ही जानने में समर्थ है तथा तू अपने आप को खुद ही जानता हुआ अपने आप में लीन है। पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि हे प्रभु! तेरी उपमा तेरे द्वारा ही वर्णननीय है अर्थात् कोई दूसरा तेरी महिमा को बयान नहीं कर सकता। गुरबाणी में अन्यत्र भी 'नाम' को ही सदैव कायम रहने वाला सच्चा धन मानते हुए पावन फरमान है :

एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥
पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ॥
धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥ *(पन्ना ५११)*

अत: वे व्यापारी धन्य हैं जिन्होंने नाम रूपी धन की कमाई की है। यही जीव की वास्तविक पूंजी है।

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥
सगल उदम महि उदमु भला ॥
हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥
सगल बानी महि अंम्रित बानी ॥
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥
नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥
(पन्ना २६६)

तीसरी असटपदी की अंतिम पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी हरि-नाम द्वारा आचरण को श्रेष्ठ बनाने को प्रेरित करते हुए, सतिसंगत का महत्व प्रतिपादित करते हुए, प्रभु-नाम हृदय में बसाने वालों को सर्वोत्तम मानते हुए, सारी दुनिया को इसी तरह पवित्र एवं निर्मल जीवन बनाने हेतु संदेश देते हुए मार्गदर्शन करते हैं। गुरु पातशाह का फरमान है कि सर्वोत्तम धर्म एवं सर्वश्रेष्ठ कर्म प्रभु-नाम का सिमरन ही है। अत: हे मन! परमेश्वर की आराधना करके अपने आचरण (चरित्र) को उज्जवल बना ले, यही है

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो ९१२९७-६२५२३*

सबसे उत्तम धर्म। साथ ही सतिसंगत में रहकर कुबुद्धि रूपी मैत अर्थात् विकारों से विकृत हुई बुद्धि को पवित्र किया जा सकता है और यही कर्म शेष समस्त कर्मों से श्रेष्ठ है। आगे गुरु साहिब मन को प्रबोधित करते हुए निर्मल उपदेश देते हैं कि हे मन! सदैव प्रभु का सिमरन कर, यह कार्य सबसे ज्यादा भलाई वाला है। प्रभु-स्तुति वाला आत्मिक जीवन प्रदान करने वाली 'बाजी' श्रेष्ठ एवं सुंदर है। परमेश्वर का पावन नाम सर्वदा (हमेशा) कानों से श्रवण तथा रसना (जीभ) से उच्चारण करता रह। अंत में गुरुदेव पावन फरमान करते हैं कि जिस किसी भी हृदय में प्रभु का नाम निवास करता हैं वह हृदय समस्त तीर्थ-स्थानों से पवित्र तीर्थ-स्थल है।

दुनिया में कर्मकांड, बाहरी दिखावे के तो अनेक स्वरूप हैं लेकिन सर्वोत्तम उद्यम हरि-नाम-सिमरन तथा उसे हृदय में बसाना ही है। प्रभु-सिमरन में मन इस तरह लीन हो जाए कि हृदय ही प्रभु का निवास-स्थान बन जाए, जैसा कि पावन बाणी में अन्य भी समझाया गया है:

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥ *(पन्ना ७९५)*

सम्पूर्ण असटपदी में नाम के महत्व को प्रतिपादित किया गया है, अत: सबसे उत्तम धर्म तथा निर्मल धर्म नाम के अभ्यास को ही बताया गया है, क्योंकि नाम-अभ्यास से मन तथा बुद्धि की समस्त कलुषता दूर हो जाती है, जिसके फलस्वरूप हृदय ही प्रभु का पक्का दीवाना बन जाता है।

सलोकु ॥

निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥
जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥

पंचम पातशाह प्रस्तुत सलोक में बेसमझ इंसान को पावन उपदेश देते हुए समझाते हैं कि हे नासमझ और गुणविहीन इंसान! सदैव उस परवरदिगार का सिमरन कर जिसने तेरी सृजना की है तथा जो तेरा सदा साथ निभायेगा। केवल परिपूर्ण परमेश्वर ही है जो सृजनहार तथा पालनहार है और जीव के साथ सदैव निभने वाला है, अन्यथा सभी मतलब के साथी हैं और मझधार में साथ छोड़ जाने वाले हैं। गुरदेव उस सच्चे प्रभु के साथ प्रीति बढ़ाने को प्रेरित कर रहे हैं।

असटपदी ॥

रमईआ के गुन चेति परानी ॥
कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥
भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥
मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥

चौथी असटपदी की पहली पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह कलयुगी जीव को सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति कृतज्ञ होने का पावन उपदेश देते हुए मार्गदर्शन कर रहे हैं कि उस परमात्मा ने तेरी बड़ी सुंदर सृजना की है।

गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि हे प्राणी! तू घर-घर में व्यापक सुंदर रमईया (परमेश्वर) को याद कर, जिसने तेरा इतना सुंदर शरीर सृजित किया है। उस विधाता ने तेरी रचना करके तुझे सजा-संवार दिया। उसी परमेश्वर ने मां के गर्भ में (जठराग्नि में) तेरी रक्षा की। यहीं नहीं, जिस प्रभु ने बाल्यावस्था में तुझे दूध पिलाया अर्थात् तेरी उत्पत्ति से पूर्व ही मां के माध्यम से तेरे लिए दूध का प्रबंध करवाया; यौवन काल में

अर्थात् जवानी में तेरे लिए अनेक तरह के भोजन एवं सुखों की व्यवस्था की, वृद्धावस्था में (जब तेरे शरीर में ताकत नहीं रही) सगे-सम्बंधियों, रिश्तेदारों को तेरी सेवा में तत्पर कर दिया, उनके हृदय में इस तरह के भाव भर दिये कि वे तुझे बैठे-बिठाये को तरल पदार्थ एवं अच्छे भोजन खिलाते-पिलाते हैं। उस परोपकारी परमेश्वर को याद कर जिसने हर रूप में, हर ढंग से तेरी प्रतिपालना की है। अंतिम पंक्ति में जीव के कृतघ्न स्वभाव हेतु उस परवरदिगार के चरणों में विनती करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे प्रभु! ये गुणहीन मूढ़ प्राणी तेरे किए (अनंत) उपकारों को नहीं जानते, अत: तुम रहमत करके इन्हें इस जन्म -मनोरथ में कामयाबी बख्शो।

मनुष्य दुनियावी प्राप्तियां करके उस दातार पिता को विस्मृत कर बैठता है तथा यही उसके जीवन रूपी बाजी को हारने का कारण बन जाता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि उन सब सुखों के साधन और माया की मिठास को कड़वाहट में बदलते देर नहीं लगती जिनके कारण तूने उस प्यारे प्रभु को विस्मृत कर दिया था:

परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥
(पन्ना १३५)

अत: सब कुछ बख्शने वाले उस कृपालु प्रभु को कभी भी हृदय से भुलाना नहीं चाहिए। प्रभु हमेशा याद रहे, यह भी प्रभु की ही कृपा से संभव हो सकता है।

जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसाहि ॥
सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥
जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥
जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥
ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥
नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥

इस पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी उस सर्व शक्तियों के मालिक प्रभु के उपकारों का जिक्र करके जीवों का मार्गदर्शन करते हुए समझा रहे हैं कि परमेश्वर की कृपा से इस धरती पर तुझे सारे सुख मिले हैं, अत: उसको हमेशा याद रख। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि हे प्राणी! जिस प्रभु की कृपा से तू सुखपूर्वक इस धरती पर निवास कर रहा है अर्थात् जिसकी रहमत सदका तू चैन से जीवन व्यतीत कर रहा है; पुत्र, भाई, मित्र, पत्नी, आदि के साथ हंस-खेल रहा है अर्थात् प्रसन्नतापूर्वक जीवन-यापन कर रहा है; जिसकी रहमत की बदौलत तू शीतल जल पी रहा है, सुखदायक हवा एवं अनमोल अग्नि का प्रयोग कर रहा है अर्थात् जिसकी कृपा से तू जल, वायु, एवं आग का अमूल्य सुख प्राप्त कर रहा है; जिसकी मेहरबानी से तू हर तरह का रस भोगता है; जिस ईश्वर ने तुझे हाथ, पैर, कान, आंखें, जीभ आदि (कर्मेंद्रियां तथा ज्ञानेंद्रियां) बख्शी हैं, खेद की बात है कि उस कृपानिधान दातार पिता को भूलकर तू अन्य पदार्थों एवं प्राणियों के साथ घुल-मिल गया है अर्थात् उन्हीं का ही होकर रह गया है। अंतिम पंक्ति में दयालु गुरुदेव पंचम पातशाह अकाल पुरख के चरणों में अरदास करते हैं कि हे प्रभु! ऐसे मूढ़, अज्ञानी एवं पापों-कुकर्मों में लिप्त प्राणियों को तू स्वयं ही कृपा-दृष्टि से पाप के गर्त से निकाल ले।

जीव के अवगुणों का अंत नहीं और उस कृपानिधान की रहमतें भी बेअंत हैं। गुरबाणी में बहुतायत से यही समझाया गया है कि निर्बल

अज्ञानी जीव स्वयं अपनी चुतराइयों से इस संसार रूपी भवसागर से पार नहीं उतर सकता। वह दयालु परमेश्वर ही रहमत करे तो सब कुछ मुमकिन हो सकता है।

प्रभु के समक्ष विनती रूप में गुरबाणी प्रमाण है :

जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥
(पन्ना ८५३)

यही नहीं, पंचम पातशाह ने अन्यत्र भी जीवों के लिए यही अरदास की है :

सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥
अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥
(पन्ना १२५१)

आदि अंति जो राखनहारु ॥
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥
जा की सेवा नव निधि पावै ॥
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥
जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥
ता कउ अंधा जानत दूरे ॥
जा की टहल पावै दरगह मानु ॥
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥
नानक राखनहारु अपारु ॥३॥

प्रस्तुत पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी कृतघ्न जीव की अज्ञानता की ओर संकेत करते हुए प्रभु के चरणों में अरदास करते हैं कि जिस प्रकार हम जैसे जीवों के पापों एवं त्रुटियों का अंत नहीं, वैसे ही उस बेअंत प्रभु की रहमतों का भी अंत नहीं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि अज्ञानी, मूढ़ मनुष्य आदि से अंत तक रक्षा करने वाले परमेश्वर से भी प्यार नहीं करता। यही नहीं, जिसकी सेवा-भक्ति से इसे नौ निधियां प्राप्त हो सकती हैं, यह मूर्ख उसके साथ चित्त नहीं जोड़ता। जो प्रभु इसके हर समय अंग-संग है अर्थात् हाज़िर-नाज़िर है उसे यह अंधा (मूढ़) कहीं दूर बसा हुआ समझता है। उस ठाकुर (पारब्रह्म) की सेवा द्वारा इसे मालिक की दरगाह में मान-सम्मान मिलता है। यह जीव तो हमेशा ही गलतियां करने वाला है, परंतु उस बेअंत प्रभु का कोई अंत नहीं, वह परिपूर्ण सदा रक्षा करने वाला है।

कहने से अभिप्राय, जीव स्वभाव से ही भूलनहार है और परमेश्वर स्वभाव से ही बख्शनहार है। हम सब जीव अज्ञानता एवं गलतियों के पुतले हैं, इसलिए कृपालु प्रभु के चरणों में विनती कर रहे हैं, हे प्रभु! हमारे दोषों का स्मरण न करते हुए हम मूढ़ अज्ञानी जीवों का उद्धार करो, जैसा कि गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी तरह अरदास की गई है :

नानक गरीब ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥ (पन्ना ७५७)

रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥
साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥
जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥
जो होवनु सो दूरि परानै ॥
छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥
संगि सहाई तिसु परहरै ॥
चंदन लेपु उतारै धोइ ॥
गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥

इस पउड़ी में भी जीव की मूर्खता एवं अज्ञानता का जिक्र करते हुए गुरु पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि जीव हीरे के समान अमूल्य हरि-नाम को छोड़ कर कौड़ी के समान माया में लिप्त हो रहा है। इससे बड़ी मूर्खता व अज्ञानता और क्या हो सकती है? यह मूढ़ प्राणी सच्चे (हीरे जैसे) मालिक को त्याग कर झूठी

माया में ग्रसित हो रहा है। यही नहीं, जो नश्वर अर्थात् नष्ट हो जाने वाला है, जीव उसे आविनाशी अर्थात् स्थिर रहने वाला समझ रहा है। मृत्यु अटल सच्चाई है। जीव उसे झूठ मानते हुए कहीं बहुत दूर समझ रहा है। जिन मायिक पदार्थों को आखिर यहीं छोड़ जाना है, उन्हीं को प्राप्त करने हेतु (दिन-रात) उद्यम, परिश्रम करता फिरता है। परमेश्वर हमेशा जीव के अंग-संग होकर मददगार होता है अर्थात् हर पल सहायता करता है, मगर जीव उसी प्रभु को हृदय से विस्मृत कर देता है अर्थात् उसे मन से भुला देता है। उसकी इस दशा (अवस्था) को उस गधे के समान समझो जो चंदन का लेप तो धोकर उतार देता है लेकिन भस्म (राख) तथा मिट्टी आदि से प्यार करता है अर्थात् उसी में लेटना पसंद करता है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह माया-ग्रसित जीव हेतु उस परवरदिगार के चरणों में अरदास करते हैं कि हे दयालु प्रभु! जीव माया के अंधेरे वाले भयानक कुएं में गिरे पड़े हैं, अत: कृपा करके इन्हें इस अंधकारमयी भवसागर के बाहर निकाल लीजिए।

मनुष्य सारा जीवन उन्ही पदार्थों का संग्रह करता फिरता है जो नाशवंत हैं। कीमती प्रभु-नाम को बिसार कर वह सदैव माया की ही भटकना में फिरता है, जिस माया के लिए गुरबाणी में यही समझाया गया है कि इसका संग्रह पाप के बिना संभव नहीं और यह मृत्यु उपरांत जीव के साथ नहीं जाती

पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
(पन्ना ४१७)

यही नहीं, गुरबाणी में तो यहां तक समझाया है कि तृष्णा की आग में सारा संसार जल रहा है और माया के लालच में यह विकार-ग्रसित होता जा रहा है, यथा गुरबाणी का फरमान है :

त्रिसना अगनि जलै संसारा ॥
जलि जलि खपै बहुतु विकारा ॥ (पन्ना १०४४)



उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें। *-संपादक।*

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-५०

विद्वान एवं कवि : पंडित देवी दास

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

पंडित देवी दास दशमेश पिता के प्रसिद्ध दरबारी कवि सेनापति, जो चंद्रसेन सेनापति के नाम से भी प्रसिद्ध हैं, के गुरु थे। अपने 'सुखसैन ग्रंथ' में कवि सेनापति ने अपने गुरु पंडित देवी दास का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया है :

चंद्रसेन ताको तनुज, कवि मतिमंद गवार।
गुर गोबिंद की सभा महि, जिंह पायो अधिकार।
ताको विद्या गुर मिलयो, चंदन देवी दास।
कीयो आप सम निंम ते, दे कै बुधि सु वास।

पंडित देवी दास अपने योग्य शिष्य कवि सेनापति की प्रेरणा से ही दशमेश पिता के दरबार में आये थे। कवि देवी दास की तीन रचनाएं उपलब्ध हैं :

१) राजनीति २) सिंह गऊ की कथा
३) लवकुश दी वार

'राजनीति', जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, राजनीति संबंधी ग्रंथ है। कई पांडुलिपियों में कवि देवी दास का 'राजनीति' और कवि सेनापति का 'चाणक्य राजनीति' एक साथ संकलित हैं, जो इन गुरु-शिष्य के अटूट रिश्ते की मिसाल हैं।

'सिंह गऊ की कथा' कृति की रचना पंडित देवी दास ने अनंदपुर साहिब में रहकर की। इस रचना में अनंदपुर साहिब की महिमा का स्पष्ट उल्लेख किया गया है :

प्रिण द्रम खग बनन के, अनंदपुरि पाइओ बास।
आवागउण न होइगा, मिट गई जम की त्रास।

इसके अतिरिक्त इस रचना में गुरमति सिद्धांतों के प्रभाव और गुरु साहिबान के प्रति कवि की असीम श्रद्धा के भी दर्शन होते हैं :

देव कथा ले भाखा जोरी।
सतिगुर मिल निरमल मति मोरी।
दया बचन की उसतति भाखी।
परमेसर साधू की पाखी।
सिंघ दइआ गऊ की वाच।
ब्रत भइआ दोनउ का साच।
जिस कै मनि प्रभु दइआ बसावै।
बाचा अचलु सो मुकती पावै।
मुख का बचन सति जो करै।
दइआवंत भउ सागर तरै।
देवी दास तिस पर बलिहारी।
आप तरहि अवरा कउ तारी।
कथा बहुला की पूरन भई।
गुर प्रसादि दुरमति उठ गई।

दोहरा

दइआ बचन जांका रहै, सो बैकुंठे जाए।
साधसंगि मन त्रिपतीए, आदि अंत सुख पाए।

रचना के उदाहरणों से स्पष्ट है कि पंडित देवी दास एक श्रेष्ठ कवि और पारंगत काव्य-शास्त्री थे।

कवि देवी दास की तीसरी रचना 'लवकुश दी वार' है, जो पंजाबी भाषा में रची गई है। दरअसल, पंडित देवी दास संस्कृत, ब्रज और पंजाबी तीनों भाषाओं के विद्वान थे।

चंद्रसेन सेनापति जैसे विलक्षण कवि का गुरु निश्चित रूप से एक उत्कृष्ट विद्वान एवं कवि क्यों न होता?



**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना) पंजाब, मो. ९४१७२-७६२७१*

ख़बरनामा

दसतार के प्रति संयुक्त राष्ट्र द्वारा फ्रांस सरकार के खिलाफ दिया फैसला प्रशंसनीय : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १४ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने सिक्ख कौम के धार्मिक तथा अलग पहचान का प्रतीक तथा विलक्षण अंग दसतार के प्रति संयुक्त राष्ट्र (मानवीय अधिकारों के बारे में कौंसिल) द्वारा फ्रांस सरकार के विरुद्ध दिया गया फैसला ऐतिहासिक तथा प्रशंसनीय करार दिया एवं फ्रांस सरकार को अपील की है कि वो इस फैसले को सतर्कता से लागू करे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से जारी प्रेस विज्ञप्ति में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि मानवीय अधिकारों के बारे में कौंसिल (संयुक्त राष्ट्र) द्वारा दसतार के प्रति फ्रांस सरकार के विरुद्ध दिए गये फैसले से समूची सिक्ख कौम को बड़ी राहत मिली है तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी इस फैसले का पुरज़ोर स्वागत करती है। विदेशी हवाई अड्डों पर सुरक्षा के नाम पर तलाशी लेने के बहाने दसतार उतरवाकर सिक्खों का अपमान किया जाता था, अब उस पर अंकुश लगेगा। उन्होंने कहा कि इससे पहले शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बार-बार देश के प्रधान मंत्री, विदेश मंत्री तथा सम्बंधित देशों के हाई कमिशनरों को पत्र लिखकर एवं निजी रूप से मिलकर दसतार के मामले को निपटाने की अपील की थी। कुछ दिन पहले जब देश के प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंघ श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करने के लिए आए थे तो उस समय भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा प्रधान मंत्री के पास दसतार का मामला बड़े जोर-शोर के साथ उठाया गया था। दुनिया के कई देशों ने सिक्खों को दसतार सजाकर ड्राइविंग तथा फैक्ट्रियों में काम करते समय सुरक्षा-टोप पहनने से छूट दी हुई है। सिक्ख धर्म '*साबत सूरत दसतार सिरा*' का धारणी है। उन्होंने कहा कि पारिवारिक पालन-पोषण के लिए दुनिया के किसी भी देश में रहते सिक्खों ने अपनी सख़्त मेहनत का सदका अपनी रोजी-रोटी के साथ-साथ उस देश की तरक्की में भी अहम योगदान डाला है। उनको अपने वतन भारत आते समय हवाई अड्डों पर तलाशी के दौरान अपमानित किया जाता था। जत्थेदार अवतार सिंघ ने इस फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र के इस फैसले से समस्त सिक्ख पंथ को बड़ी राहत मिलेगी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का बरेल लिप्यंतरण

श्री अमृतसर : ०७ फरवरी : अब दृष्टिहीन व्यक्ति स्वयं श्री गुरु गंथ साहिब की बाणी पढ़ सकते हैं। श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के दृष्टिहीन भूतपूर्व हजूरी रागी भाई गुरमेज सिंघ ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का १८ पोथियों के रूप में बरेल लिप्यंतरण किया है तथा इसका पहला स्वरूप सैंट्रल खालसा यतीमखाना को भेंट किया है। चाहे श्री गुरु ग्रंथ

साहिब का अलग-अलग भाषाओं में अनुवाद हो चुका है परंतु दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिए इसका बरेल लिप्यंतरण पहली बार हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का बरेल लिप्यंतरण करने का शुभ कार्य भाई गुरमेज सिंघ ने लगभग ११ वर्षों में सम्पूर्ण किया है। भाई गुरमेज सिंघ ने सन् २०११ में इसका पहला स्वरूप, जो १८ पोथियों के रूप में है, तैयार किया है। इसके ११X१६ इंच आकार की १८ पोथियों में कुल २१५३ पन्ने हैं।

भाई गुरमेज सिंघ १९७१ ई में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर) में बतौर रागी सेवा में आए तथा १९९८ ई में सेवा-मुक्त हुए। इस महान कार्य को सम्पूर्ण करके भाई गुरमेज सिंघ अपने आप को भाग्यशाली समझते हैं।

द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स के दाखिले की अंतिम तिथि ३१ मई

श्री अमृतसर : १० फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा सिक्ख धर्म की प्रारंभिक जानकारी देने हेतु घर बैठे ही द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स पंजाबी, हिंदी तथा अंग्रेजी में करवाया जा रहा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी के अपर सचिव स. सतबीर सिंघ ने बताया कि पत्राचार कोर्स वर्ष २०१२-१३ का दाखिला शुरू हो चुका है। इस कोर्स में किसी भी धर्म को मानने वाला, जो सिक्ख धर्म से संम्बधित जानकारी पाने का इच्छुक है, दाखिला ले सकता है। दाखिला लेने के लिए उम्र १६ वर्ष से ज्यादा होनी चाहिए तथा जिज्ञासु पंजाबी/हिंदी/अंग्रेजी पढ़-लिख सकने के योग्य हो। उन्होंने कहा कि इस कोर्स के लिए आम लोगों के साथ-साथ नौकरीपेशा तथा सेवा-मुक्त कर्मचारी व व्यापारी लोग भी दाखिला ले सकते हैं। दाखिले की अंतिम तिथि ३१ मई, २०१२ है। उन्होंने बताया कि इस कोर्स की लिखित परीक्षा में से पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान पर आने वाले विद्यार्थियों को क्रमश : ७१००, ५१०० तथा ३१०० रुपये का इनाम दिया जाता है। इसके अलावा ८० प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त करने वाले पहले ५१ विद्यार्थियों को ११०० रुपये प्रति विद्यार्थी विशेष इनाम भी दिया जाता है। स. सतबीर सिंघ ने समूह संगत को अपील की कि अधिक से अधिक संख्या में कोर्स में दाखिला लेकर सिक्ख धर्म की प्रारंभिक जानकारी हर पक्ष से प्राप्त की जाए। इस अवसर पर उप सचिव स. बलविंदर सिंघ जौड़ासिंघा भी उपस्थित थे।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०३-२०१२